दादी गुल्ज़ार द्वारा ब्रह्मा बाबा का लास्ट संदेश

वी.सी.डी. नं.2360 ऑडियो-2846 अव्यक्त वाणी-23.07.17 (बापदादा का अंतिम संदेश)

इसी महीने की पोशीदा रीसेण्ट अ.वा. चल रही थी- 23.07.2017। ये वाणी सभा में नहीं सुनाई गई थी, कोई को पर्सनली सुनाई गई। इसका नाम बाबा ने 'अंतिम संदेश' दिया है और जिसमें बताया कि अभी थोड़े समय के बाद साइंस के सब साधन समाप्त होने वाले हैं; इसलिए जो बच्चे यज्ञ में ही रहकर गफलत कर रहे हैं, बाबा से नाफ़रमानबरदार बन रहे हैं, उनका क्या होगा? ये संदेश सबके पास पहुँचना चाहिए। ऊपर ऊँची स्टेज में जाकर बाबा फिर ये नहीं देखेंगे कि ये बच्चा कितना प्यारा था, कितना अच्छा था। ये भी नहीं समझना कि 20 साल पड़े हैं, 100 साल का संगमयुग है। 20 साल तो हैं ही नहीं; क्योंकि ये जो 20 साल बचे हैं वो तो दुनिया वालों के लिए बचे हैं। सब-कुछ अचानक होने वाला है और खास बात ये कि बाबा याद दिलाना चाहते हैं- ये शरीर प्रत्यक्ष नहीं होना चाहिए। कौन-सा शरीर? गुल्ज़ार दादी का नहीं, सिर्फ़ बाबा की आवाज़ पहुँचनी चाहिए; क्योंकि अभी दूसरी बच्ची का जो शरीर है, बहुत नाजुक है। कौन-सी बच्ची का शरीर बहुत नाजुक है? (किसी ने कहा-गुल्ज़ार दादी का) हाँ जी! इस बच्ची का शरीर यूज़ नहीं कर सकते; इसलिए जो बाबा बोल रहे हैं, सभी तरफ़ यह आवाज़ जानी चाहिए। इस बात में अगर संशय आया तो फेल। ये भी नहीं सोचना कि अभी बाबा ने ब्रह्मा का तन लिया था, फिर दूसरी बच्ची का तन लिया; ब्रह्मा बाबा के बाद किसका? अब किसका तन लिया। बाबा ने जिसका तन लेना है वो लिया; क्योंकि ये तन गुप्त-रूप में है, पीछे बोला ना- ''ये शरीर प्रत्यक्ष नहीं होना चाहिए, सिर्फ़ आवाज़ जानी चाहिए। ये तन किसी (अज्ञानी) के सामने नहीं आना चाहिए। जहाँ तक इस तन की आवाज़ पहुँचा सकते हैं, वहाँ तक आवाज़ पहुँचनी चाहिए। पहुँचेगी? पहुँचेगी ना! हाँ!

क्योंकि आज बच्चों में ज्ञान कुछ ज़्यादा ही चल गया है; लेकिन बाप का ज्ञान नहीं, खुद का ज्ञान ज़्यादा चल गया है। खुद को बाप से भी बड़ा ज्ञानी समझने लगे हैं, खुद बाप बनकर बैठ गए।'' उन खास बच्चों का आई.डी. प्रूफ भी दिया- किसी को 20 साल हुए, कोई को 30 साल हुए, कोई को 40 साल हुए। तो वो अपन को समझते हैं कि हम बाप के भी बाप बन गए। ये नहीं सोचते कि बाप तो बाप ही है। जो भी आप बने हो, चाहे दुनिया की बड़े-ते-बड़ी जनरेशन, क्रिश्चियन्स के भी सार-रूप में बाप, चाहे बौद्धियों के भी सार-रूप में बाप, चाहे इस्लामियों के बाप, जो भी आप बने हो वो बाप की वजह से बने हो, बाप ने ही तुम्हारा नम्बर डिक्लेयर किया था कि किस धर्म के कौन बीज हैं; लेकिन ये नहीं सोचते कि बाप तो बाप है। ये सारी बातें बच्ची को जहाँ-2 मेन-2 जाना चाहते हैं, जो भी हैं जिस सेण्टर पर भी और जो अभी नया अभियान निकला है, जो पूरे विश्व में चक्कर लगने वाला है। किस अभियान का? ''तुम बच्चों को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में 40 से 50 वर्ष लगने हैं/लगते हैं।'' (मु.ता. 6.10.74 पृ.2 अंत) तो 40 वर्ष किसके लिए बोले, जो खुद का ज्ञान चलाय दिया? अरे, जो मनुष्य-सृष्टि में क्रिश्चियंस का मूल बीज साकारी बाप है, उसके लिए 40 वर्ष बोले। वो बाप उन आत्माओं के बीच हीरो पार्टधारी है। दुनिया के सामने उसी के अभियान की प्रत्यक्षता होनी है। कितनी दुनिया के सामने? 500-700 करोड़ दुनिया के सामने इसी विनाशकारी परमात्म-बॉम्ब के द्वारा बाप की प्रत्यक्षता होनी है और बॉम्ब कौन छोड़ते हैं? बॉम्ब किनके द्वारा फोड़ा जाता है- आस्तिकों के द्वारा या नास्तिकों के द्वारा? (किसी ने कहा- नास्तिकों के द्वारा) जो दुनियावी नास्तिक हैं, वो स्थूल बॉम्ब छोड़ते हैं, जिसकी बदबू से सब खलास हो जाता है, सब मृत्यु के घाट पहुँच जाते हैं। है ना! अरे! चतुर्थ विश्वयुद्ध होगा, तो सब मारे जाएँगे; शरीर मरता है या आत्मा? (किसी ने कहा-शरीर मरता है) कोई बचेगा? कोई बेहद के बाप का बच्चा नहीं बचेगा। फिर नई सृष्टि कहाँ से आएगी, पहला पत्ता कृष्ण कहाँ से आएगा? तो विश्वपिता का पूरे विश्व में चक्कर लगने वाला है। ये जो अभी नया अभियान बताया- परमात्म प्रत्यक्षता बॉम्ब, जो सभी युवाएँ मिलकर बाबा को प्रत्यक्ष करने वाले हैं। कौन? युवाएँ। युवाओं में ज़्यादा अधरकुमार होते हैं, अधरकुमारियाँ होती हैं, कुमारियाँ होती हैं या कुमार होते हैं? (किसी ने कहा- कुमार) वो क्यों बदबू वाला ग्लानि का बॉम्ब फोड़ेंगे? अरे, इस अंतिम समय में उनका ऐसा पार्ट क्यों? कारण का पता नहीं! सबसे ज़्यादा काम-विकार की आग किसको लगती है- युवाओं को, बूढ़ों को, अधरकुमारों को, अधरकुमारियों को या कन्याओं को? अरे, बोलो-2! (किसी ने कहा-कुमारों को) जो दुनिया वाले कहते भी हैं कि युगलों की 999 चिंताएँ, जिनमें पुरुषों को खास बाबा ने दुर्योधन-दुःशासन बताया, फिर भी नम्बरवार होते हैं या एक जैसे? (सभी ने कहा- नम्बरवार) तो कुमारों की एक चिंता एक पलड़े पर रख दो और युगलमूर्त की 999 चिंताएँ तराज़ू के दूसरे पलड़े पर रख दो, तो कौन

भारी पड़ेगा? कुमार भारी पड़ जाएगा। इतनी काम-विकार की आग लगी रहती है! फिर अगर आग पूरी न हो तो रिज़ल्ट क्या आता है? कामेषु-क्रोधेषु हो जाते हैं। तो सभी युवाएँ मिलकर बाबा को इसी बदबू के बॉम्ब द्वारा प्रत्यक्ष करने वाले हैं। ये बाप की प्रत्यक्षता का एक लास्ट संदेश होगा, सारी दुनियाँ, 500-700 करोड़ के बीच लास्ट संदेश। सारी दुनियाँ के बीच क्यों? अरे, सारी दुनियाँ के मनुष्यमात्र को मुक्ति-जीवन्मुक्ति पानी है या नहीं पानी है? (किसी ने कहा-पानी है) तो मुक्ति-जीवन्मुक्ति का वर्सा बाप के बगैर कोई और देगा क्या?

तो बाप को पहचानेंगे, मिलेंगे तब वर्सा मिलेगा कि बिना पहचाने वर्सा मिलेगा? (किसी ने कहा-पहचानेंगे तो वर्सा मिलेगा) जो ब्रह्मा मुख से मुरली में भी बोला- ''जब फादर है तो ज़रूर फादर मिलना चाहिए। फादर सिर्फ कहें और कब मिले ही नहीं, तो वह फादर हो कैसे सकता? सारी दुनिया की जो भी आत्माएँ हैं, सबसे मिलते हैं।'' (मु. 8.7.74 पृ.1 मध्य) कोई को सभी इन्द्रियों के द्वारा, क्लोज़ कॉण्टैक्ट में आकर मिलते हैं, कोई को कोई-2 इन्द्रियों से मिलते हैं। कोई कान से टैपरिकॉर्डर में, वी.सी.डी. में, टी.वी. में आवाज़ सुनेंगे। कोई अख़बारों में, टी.वी. में फोटो देखेंगे और आकर्षित हो जाएँगे। जो तुम बच्चों को बताया भी है- जो देखे इन आँखों से और इन कानों से दो शब्द भी जो सुने, बड़े लम्बे-चौड़े व्याख्यान की बात नहीं, जो 80 साल से गीता-ज्ञान देते चले आ रहे हैं, कानों से दो शब्द भी बाप के द्वारा सुनेंगे तो पहचान जाएँगे; इसीलिए यह लास्ट बाप की प्रत्यक्षता का संदेश है सारी दुनियाँ के लिए और ये जो परमात्म-बॉम्ब के द्वारा बाप की प्रत्यक्षता का प्लान बनाया है, जिसकी बुद्धि में भी ये प्लैन आया है; नाम नहीं बताया, थोड़ा-सा इशारा दे दिया- कोई को 20 वर्ष, कोई को बाप बनकर बैठे 30 वर्ष, कोई को 40 वर्ष हुए। तो जिसने भी बनाया है, वो उसने नहीं बनाया है, बाप ने कैच कराया है।

तो बच्ची के तन में तो बाबा आकर इतना नहीं बोल सकता, खुल करके विस्तार नहीं बता सकता। इतना माने कितना? जितना शास्त्रों में गायन है, चित्र बने हुए हैं। चित्र काहे की यादगार है? चरित्र की। नंगा नाच। किसके चित्र बने हुए हैं? नंगा नाच करने के कोई चित्र बने हुए हैं? किसके? (किसी ने कहा- शंकर के) तो ब्रह्मा बाबा इतना बच्ची के द्वारा नहीं बोल सकता। कौन-सी बच्ची के द्वारा? (किसी ने कहा-गुल्ज़ार दादी) सभा में इतना नहीं बोल सकता। कन्या के मुख से नंगा ज्ञान-डांस हो, तो कोई को अच्छा लगेगा? वो भी भारतीय कन्या के द्वारा? (किसी ने कहा-नहीं) तो हलचल भी नहीं, किस बात से? अरे, भूलते जा रहे, (किसी ने कहा-नंगा नाच) नहीं! वो नंगा डांस तो कल्याणकारी है। जिनकी समझ में नहीं आता, ठोस बुद्धि है, उनको खोल-2 करके समझाया जाता है। इस बात पर अचल रहना है, जो ग्लानि का प्रत्यक्षता-बॉम्ब युवाओं के द्वारा फटेगा तो उसमें अचल रहना है, कोई हलचल में नहीं आना है। किसके लिए बोला? अरे, दुनिया वालों के लिए बोला कि हम बच्चों के लिए बोला? हम बच्चों के लिए बोला, जिनकी बुद्धि में सारा ज्ञान बैठा हुआ है। कौन-सा ज्ञान? कि बाप आते हैं तो जन्म-जन्मांतर के लिए नम्बरवार राजा-रानी बनाने के लिए क्या सिखाते हैं? राजयोग सिखाते हैं, जिसमें राज़ भरा हुआ है। बच्चाबुद्धि आत्माएँ राज़ को पहचानेगी, कृष्ण-जैसी/दादा लेखराज-जैसी बच्चाबुद्धि आत्माएँ राज़ की बात को जल्दी पहचानेगी या जो सृष्टि रूपी रंगमंच पर पुराने-ते-पुराने पूरे 84 जन्म लेकर आए हैं, वो अनुभवी आत्माएँ जल्दी राज़ की बात को पहचानेंगी? कौन-सा राज़? (किसी ने कहा-मैं आत्मा ज्योतिर्बिन्दु) कितनी आत्माएँ राजयोग सीख करके राजा-रानी बनती हैं, जिनके हाथ में कुछ-न-कुछ राज्य की सत्ता ज़रूर होती है? जो शास्त्रों में 16 हज़ार गाई हुई हैं- गोप और गोपियाँ।

यह शब्द क्यों बोला? 'गोप-गोपियाँ' नाम क्यों दिया? गीता में बोला है ना-''ज्ञान गुह्यम्,'' जो राज़ की बात है। दुनिया वाले उस राज़ को नहीं समझेंगे कि गोप-गोपियाँ ने कौन-सा गुप्त सम्बंध जोड़ा, कौन-कौन-सी इन्द्रियों के द्वारा जोड़ा, कब जोड़ा, कैसे जोड़ा। ये दुनिया वाले जानेंगे? (किसी ने कहा-नहीं) जिन्होंने प्रैक्टिकल में राजयोग सीखा है, वो ही आत्माएँ गहराई से जान सकती हैं। जिन्होंने सीखा ही नहीं-''गुह्यात् गुह्यतरम् ज्ञानम्।'' (गीता 18/63) जिन्होंने प्रैक्टिकली जाना ही नहीं, देखा ही नहीं, अनुभव ही नहीं किया, (वो आत्माएँ गहराई से नहीं जान सकतीं)। जन्म-जन्मांतर जो राजा-रानी बनते हैं, राजकुल में आते हैं, उस 16 हज़ार के ईश्वरीय परिवार ने प्रैक्टिकल अनुभव सहित समझा। ईश्वरीय परिवार में, शास्त्रों में कितनी गोप-गोपियाँ गाई हुई हैं? (किसी ने कहा-16 हज़ार) माला भी बनी हुई है। माला माने संगठन, राजयोग सीखने वालों का बड़े-ते-बड़ा संगठन। कितनों की माला? 16 हज़ार की माला, जो आज भी पुराने-2 मंदिरों में रखी हुई हैं। भक्तजन जाते हैं, चार-2/आठ-2/दस-2 लोग मिल करके माला खींचते हैं। संगमयुग में यह शूटिंग होती है। उस संगठन के आत्मा रूपी मणकों को संगठित होकर लोग ईश्वरीय ज्ञान में खींचते

हैं और वो आत्माएँ उन राज-परिवार में आने वाले 16 हज़ार मणकों रूपी आत्माओं के प्रजा बनते हैं। जिसकी जो जितनी प्रजा बनेगी, उसको ही तो प्रभावित करेंगे। प्रभावित माने प्रजा। अब जिसने जितनी प्रजा बनाई हो। तो बड़े-ते-बड़ी माला है- प्रजाजन का 9 लखा हार। छोटी माला है ब्रह्मा की हज़ार भुजाएँ, फिर उससे छोटी माला 108 जो राजाएँ बनते हैं। माना सिर्फ़ राज-परिवार के सदस्य भी राजाएँ बनते हैं। इन राजाओं की सारी प्रजा के ऊपर सत्ता होती ही है, सारे राज्य के ऊपर। हाँ, राजा के परिवार में आने वाले जो भांती होते हैं, उनका सबका प्रभाव सारे राज्य में तो नहीं होता है- कोई का किसके ऊपर प्रभाव, कोई का किसके ऊपर प्रभाव। जैसे प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति का बॉडीगार्ड हो, तो उसकी भी सत्ता कुछ चलेगी या नहीं चलेगी? (किसी ने कहा-चलेगी) ऐसे ही जो 16 हज़ार ईश्वरीय परिवार है, वो सारे-के-सारे कुछ-न-कुछ सत्ता लेते हैं, संगम में योगबल की ताकत लेते हैं, राजाई की कुछ-न-कुछ ताकत अपनी मुठ्ठी में कर लेते हैं। जैसे दिखाते हैं राज्य तो उग्रसेन का था। फिर क्या हुआ? कंस का राज्य था? अरे, लास्ट में कंस ने अपनी मुठ्ठी में ले रखा। पहले उसके बाप उग्रसेन का राज्य था। सारे मथुरा राज्य का राजा उग्रसेन ही था; लेकिन जो मुख्य भांती था उग्रसेन के परिवार में- कंस, उसने सारे राज्य की मुख्य-2 गुण्डे-जैसी आत्माओं को अपनी मुठ्ठी में कर लिया और उग्रसेन को पता भी नहीं चला। महाभारत में ऐसे ही धृतराष्ट्र, कौरवों का राजा सारे कौरव राज्य का मुखिया था; लेकिन बहुत सारी सत्ता किसके हाथ में आ गई थी? दुर्योधन-दुःशासन के हाथ में आ गई थी। तो जो परिवार के भांती होते हैं, राजा नहीं होते हैं, फिर भी उनके हाथ में सत्ता हो सकती है या नहीं हो सकती है? (सभी ने कहा- हो सकती है) कोई ईश्वरीय कानून के आधार पर सत्ता अपने हाथ में लेते हैं और कोई आसुरी कानून के आधार पर हिस्ट्री में प्रसिद्ध औरंगज़ेब की तरह सत्ता अपनी मुठ्ठी में ले लेते हैं- ये बात अलग है। तो 16000 जो राज-परिवार में आने वाले हैं, वो सभी भांती माने संबंधी कोई भी राजा के राज्य में आएँगे, कोई भी जन्म में आवेंगे, उनके हाथ में कुछ-न-कुछ सत्ता ज़रूर आएगी। तो ये राजाएँ, ये राज्य में सत्ता लेने वाले सत्ताधीश आत्माएँ, राज्य के भांती, राजा के संबंधी कहाँ तैयार हो रहे हैं? अभी संगमयुग में तैयार हो रहे हैं और वो राजयोग सिखाने वाला एक ही बाप है, जो एक ऊँच-ते-ऊँचे से इन्द्रियों द्वारा प्रैक्टिकल संग का रंग लेने वाली राज़ की बात सिखाता है, जिससे राज्याधीश बनते हैं, सत्ताधीश बनते हैं। बाकी दूसरे तो ऐसे ही बरगलाते हैं। बरगलाते हैं कि हम तुम्हें राजयोग सिखाएँगे। जैसे हम बताते हैं वैसे चलो। चाहे वो संगमयुग में कोई भी अलग-2 पार्टियाँ बनाकर बैठें। जो बाबा ने ब्रह्मा मुख से मुरली में ही बता दिया- ''आठ राजाइयाँ स्पष्ट दिखाई देंगी।'' तुम ब्राह्मणों में, ब्राह्मणों की दुनिया में ऐसा समय भी आने वाला है। संसार में जो गायन है- ''युनाइटेड वी स्टैंड, डिवाइडेड वी फॉल।'' युनाइटेड माने संगठित, संगठित हो करके रहेंगे, बेहद वसुधैव कुटुम्बकं रूपी परिवार में एक बाप के बच्चे बनकर रहेंगे, एक बाप के बच्चे आपस में भाई-2/भ्रातृत्व भाव (होगा), तो खड़े रहेंगे। जो बोला- अचल रहना है, चाहे कोई भी बॉम्ब फटे, चाहे बड़े-ते-बड़ा परमात्म-बॉम्ब फटे। एक बाप के सम्बंध के आधार पर संगठित बने रहेंगे, आपस में आत्मा-2 भाई-2 बन करके रहेंगे, आत्मिक स्थिति में रहेंगे, तो क्या होगा? युनाइटेड वी स्टैंड, अचल रहेंगे, अडिग रहेंगे, कोई भी ग्लानि का बड़े-ते-बड़ा बॉम्ब फूटता रहे, हमारे ऊपर किसी का कोई असर होने वाला नहीं है। इसलिए बोला- हलचल भी नहीं, अचल रहना है; क्योंकि अब कहाँ जाना है? अंत मते सो गते हो जाएगी। अगर अंतिम समय में आत्मिक स्थिति से हिल गए तो हलचल में आ गए या अचल रहे? हलचल में आ गए, अचल नहीं कहा जाएगा; क्योंकि जो अचल-अखण्ड आत्मा के अभिमान में रहने वाली आत्माएँ हैं, उन बच्चों के लिए अंत समय का क्या गायन है? अब घर जाना है। अंत समय में सबके मन के अंदर क्या बात पक्की होनी चाहिए? (किसी ने कहा-अब घर जाना है) और आगे-पीछे 500-700 करोड़ को घर जाना है या सिर्फ़ हम बच्चों को जाना है? (किसी ने कहा-500-700 करोड़ को) अब घर जाना है; लेकिन अभी किसके लिए कहा? अभी फिलहाल किसके लिए बोल रहे हैं? आत्मिक स्थिति वाले बच्चों के लिए कहा- अचल रहना है। ये बॉम्ब फटे, चाहे कुछ भी फटे, कोई के ग्लानि के प्रभाव में नहीं आना है। अगर प्रभावित हो गए तो? (किसी ने कहा-प्रजा बनेंगे) जिनसे प्रभावित हो जाएँगे, उनकी प्रजा बनना पड़ेगा और जो यादव हैं, विदेशी हैं, इस्लामी-क्रिश्चियन हों या बौद्धी हों, भारत की 2500 वर्ष की हिस्ट्री में जो बौद्धी, इस्लामी और क्रिश्चियन्स के प्रभाव में आते रहे, ''अहिंसा परमोधर्म'' कहा और सरेण्डर हो गए, वो सब यादव सम्प्रदाय हैं, बॉम्ब फोड़ने वाले हैं। ये आत्माएँ इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर बाद में आती हैं या पहले आती हैं? (किसी ने कहा-बाद में) बाद में आने वाले बच्चाबुद्धि होते हैं, ज़्यादा-से-ज़्यादा अति के देहाभिमानी युवा होते हैं कि अनुभवी वयोवृद्ध होते हैं? युवा वर्ग ही होते हैं।

तो बच्चों में अभी देहभान बहुत बढ़ गया है; इसलिए बताया- अपने को कण्ट्रोल करना है। बच्चे साइन्स के साधनों में इतना फँस चुके हैं कि हरेक के कान में, हरेक के हाथ में क्या लगा रहता है? (सभी ने कहा-मोबाइल) यह साइन्स का साधन है या

साइलेंस का साधन है? (सभी ने कहा- साइन्स का) अपने जीवन में देखें कि हम ईश्वरीय सेवा में ज़्यादा लगे रहते हैं या मोबाइल के द्वारा अपनी मस्ती की ज़िन्दगी में ज़्यादा लगे रहते हैं? (किसी ने कहा-मस्ती में) मोबाइल के द्वारा, टी.वी. के द्वारा, 24 घण्टे में काउण्ट करें- ये अल्पकाल के साधन जो बहुत जल्दी खत्म होने वाले हैं, ऐसा तो नहीं- हम उनके आदी हो गए हों! मान लो, क्लास में कोई की शिकायतें बार-2 आ रही हैं कि यह सीरियल देखते हैं, सिनेमा देखते हैं, गन्दे-2 गाने सुनते हैं, ब्ल्यू फिल्में देखते हैं और उनके मोबाइल क्यों न छीन लिए जाएँ। 80 साल तक अभी पढ़ाई हुई, बाप ने सौम्य रूप धारण किया या प्यार के अलावा बच्चों को कुछ और दिया? प्यार का सागर बनकर रहा। अभी तो बच्चों के लिए बहुत थोड़ा टाइम बचा है, ऐसे नहीं समझें- 20 साल पड़े हैं। बच्चों के लिए 20 साल तो हैं ही नहीं। बच्चों के लिए सम्पन्न बनने के लिए, सम्पन्न राजधानी में आने के लिए, जो राजधानी सुप्रीम बाप के द्वारा स्थापन होती है, उस राजधानी में आने के लिए 20 साल हैं? 20 साल तो हैं ही नहीं।

अरे, सम्पन्न दुनिया की राजधानी, ईश्वरीय राजधानी बनेगी तो दुनिया के राज्यों में, दुनिया के देशों में जो विदेशियों/विधर्मियों की राजाइयाँ चल रही हैं, राजधानियाँ बनी हुई हैं, उनसे टक्कर कब होगी? बिना लड़ाई के राजाई मिलती है क्या? (सभी ने कहा-नहीं मिलती) हिस्ट्री क्या कहती है? लड़ाई, फिर राजाई। जो इस ज्ञान-अज्ञान की लड़ाई में जीतेंगे वो राजाई प्राप्त करेंगे। जो गीता में अर्जुन से कहा- जीतेगा तो विश्व का राज्य-भाग लेगा, अगर लड़ते-2 शरीर भी छूट गया तो कम-से-कम स्वर्ग की राजधानी में तो आ ही जाएगा। इसलिए अभी ये साइन्स के साधनों में फँसने का समय नहीं रहा, अभ्यासी नहीं बन जाना है। इतना साइन्स के साधनों में फँस चुके हैं कि जो अपनी शक्ति क्या है? अपनी माने? पराई माने? अपनी माने आत्मा की शक्ति क्या है? आत्मा की शक्ति कौन-से बच्चे प्राप्त करते हैं? दुनिया में कितने बच्चे हैं जो आत्मा की शक्ति प्राप्त करके साइलेन्स की पावर ले लेते हैं, बाप के घर में पहले-2 जाकर ऊँचे-से-ऊँची जो साइलेन्स की पावर वाली कुर्सियाँ हैं, वो कुर्सी ले लेते हैं? (किसी ने कहा- 4.5 लाख) साढ़े चार लाख प्रैक्टिकल योगी बच्चे योगबल की पावर दुनिया वालों के बीच में दिखाएँगे या नहीं दिखाएँगे? (किसी ने कहा- दिखाएँगे) साइलेन्स की पावर से सारी दुनियाँ में जितनी भी विदेशी-विधर्मी राजाइयाँ हैं, राजधानियाँ हैं, उनको ध्वस्त कर डालेंगे। दुनिया में कौन-सी राजधानी बचेगी? अरे! आसुरी राजधानियाँ खत्म हो जाएँगी, तो कौन-सी राजधानी बचेगी? (किसी ने कहा-ईश्वरीय) ईश्वर के द्वारा जो राजधानी स्थापन की जाती है, वो दुनिया में बचेगी या नहीं बचेगी? (सभी ने कहा-बचेगी) या तो दुनिया के लोग उस ऊँचे-ते-ऊँची राजधानी के सामने नतमस्तक हो जाएँ, आसुरी राजधानी की सत्ता को त्याग देंगे। वो साइन्स के साधन असुरों के द्वारा बनाए हुए हैं या ईश्वर के द्वारा बनाए हुए हैं? आसुरी बुद्धि वालों के द्वारा बनाए हुए हैं या जिनकी ईश्वरीय बुद्धि है, ईश्वरीय मत पर चलने वाले हैं, उनके द्वारा बनाए हुए हैं? (किसी ने कहा-आसुरी) अपना स्वरूप है, वो भूल गए। क्या है अपना स्वरूप? आत्मा अविनाशी।

और जिसे प्रकृति कहते हैं- पर+कृति; 'पर' माने पराई, 'कृति' माने रचना। जो दूसरों की रचना है, अपनी नहीं है, उसके आधीन होते जा रहे हैं। प्रकृति के पाँच तत्व हैं जिनके संघात से प्रकृति बनती है। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश- ये जड़ तत्व हैं या चैतन्य हैं? (किसी ने कहा-जड़ हैं) जड़ तत्वों में ताकत होती है या चैतन्य में ज़्यादा ताकत होती है? (किसी ने कहा-चैतन्य में) तो जो जड़ साधन हैं, उनको अपनाय लिया है। जो अपना है, आत्मा की आत्मिक शक्ति- योगबल, साइलेन्स की शक्ति, उसको भूल गए हैं। इतना भूल गए हैं कि बाप इतना ज़ोर देते हैं अमृतवेले की याद के ऊपर- आत्मिक स्थिति में रहो। अरे, अमृतवेले के पुरुषार्थ के ऊपर ज़ोर दिया या नहीं दिया? (सभी ने कहा-दिया) रिज़ल्ट क्या है? अमृतवेले में मैं ज्योतिबिन्दु आत्मा हूँ, मैं भृकुटि के बीच में एक सितारा हूँ, वो सितारा कितनी देर याद रहता है? और पाँच तत्वों के बने हुए साधन, पाँच तत्वों का बना हुआ शरीर, पाँच तत्वों के द्वारा बनाए हुए जो संबंधियों के शरीर हैं, चाहे गहरे-ते-गहरे संबंधी हों- माता-पिता, बाल-बच्चे, उनके शरीर ज़्यादा याद आते हैं या उनकी आत्मा ज्योतिबिन्दु याद आती है? (किसी ने कहा-शरीर याद आते हैं) अमृतवेले जो भी 3/4 घण्टे का टाइम दिया, उसमें कौन-सी स्थिति हावी रहती है- देहभान की स्थिति हावी रहती है या आत्मिक स्थिति हावी रहती है? (किसी ने कहा- देहभान की) इसलिए बोला- जो प्रकृति के साधन हैं, जिसे प्रकृति कहें, वो परकृति (विदेशियों ने ही प्रकृति को पोल्यूट किया है) अपना सब-कुछ भयानक नज़ारा तो दिखाएगी ना! अपनी सारी ताकत दिखाएगी। कौन? (किसी ने कहा-प्रकृति) परकृति; स्वकृति (परमात्मा) नहीं। 'पर' माने शरीर पर है या स्व है? (किसी ने कहा- पर) शरीर और शरीर के पाँच तत्व जिनसे ये शरीर बना है, ये भी अपना नहीं है, अंत समय में ये काम नहीं आएगा; इसलिए बोल दिया- शरीर भल कैसा भी हो, आत्मा पावरफुल होनी चाहिए।

‘‘शरीर कमज़ोर है, चलता नहीं है; वह तो अंतिम (84वें अंत समय की तामसी रचना) है, वह तो (कमज़ोर) होगा ही; लेकिन आत्मा पावरफुल हो। शरीर के साथ आत्मा कमज़ोर न हो।’’ (अ॰वा॰ 5.12.89 पृ॰61 अंत) आत्मा पावरफुल हो जाएगी तो कितना भी वयोवृद्ध शरीर हो जाए, तो भी विजयी बनेंगे, सेवाधारी बनेंगे या प्रकृति के साधनों की सेवा लेते-2, प्रकृति में फँसने वाले बनेंगे? अभी देखें कि ये समय; कौन-सा समय? ये समय माने? (किसी ने कहा-संगमयुग) अरे, संगमयुग तो 80 साल हो गए! ये समय, कौन-सा समय बताया? (किसी ने कहा-अमृतवेला) बेहद में प्रैक्टिकल ज्ञान-सूर्य की प्रत्यक्षता का समय अमृतवेला! 80 साल से अमृतवेला-3 चिल्लाते आए। वास्तव में अमृतवेला तो वो होता है कि जब सूर्योदय होने वाला होता है, सूर्य प्रत्यक्ष होने वाला होता है। तो 80 साल में सूर्य प्रत्यक्ष हुआ या अब होने वाला है? (किसी ने कहा- अब होने वाला है) तो असली अमृतवेला क्या हुआ- अब या जो बीत गया, तब? (किसी ने कहा-अब) ये समय क्या कराने वाला है, ये देखें। प्रकृति अपना सब-कुछ (विकराल रूप) दिखाएगी। प्रकृति के दो रूप दिखाए, गीता में भी बताए- एक जड़ रूप- पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश और एक चैतन्य प्रकृति- पृथ्वी देवता, जल देवता, वायु देवता, अग्नि देवता रूपों में। ये देवता चैतन्य थे या जड़ थे? (किसी ने कहा- चैतन्य थे) लेकिन जड़त्वमयी बुद्धि वाले थे या चैतन्य बुद्धि वाले थे? जड़त्वमयी बुद्धि वाले थे। तो ये प्रकृति के सभी रूप अपनी सारी ताकत दिखाएगी। जो परा प्रकृति का स्वरूप है, चैतन्य रूप, क्या है? भूल गए? माया ने प्रकृति से हाथ मिलाय लिया है। ‘‘जब दादी वतन में पहुँची तो प्रकृति के पाँच ही तत्वों ने सूक्ष्म स्वरूप से दादी का स्वागत किया।’’ (अ॰संदेश 27.8.07 पृ॰3 मध्यांत) कौन-सा हाथ मिलाय लिया है? (किसी ने कहा-बुद्धि रूपी) तो बुद्धि रूपी हाथ चैतन्य आत्मा को होता है या जड़ प्रकृति के पाँच तत्वों में बुद्धि होती है? (किसी ने कहा-चैतन्य) तो वो चैतन्य आत्मा कौन है प्रकृति, जिसका नाम दिया- ‘प्र’ माना प्रकृष्ट रूप, ‘कृति’ माने रचना? कैसी रचना? प्रकृष्ट रचना। जिसकी रचना में रचयिता ने; रचयिता साकार या निराकार? (सभी ने कहा- साकार) जिसकी रचना में उस साकार प्रकृतिपति ने एड़ी से लेकर चोटी तक की सारी ताकत लगा दी है। दुनिया में भी कोई परिवार बनता है, कोई भी बाप परिवार बनाता है तो किसका आधार लेता है? (किसी ने कहा-माता का) पहली रचना क्या है? (किसी ने कहा-प्रकृति) माता। तो जो पहली रचना है उसमें पिता अपनी सारी ताकत उड़ेल देता है, जो भी उसमें सत् की ताकत है, सत्व है, जिसे पुरुष कहते हैं। पुरुषार्थी पुरुष में सत्व क्या है जो सबसे बड़ी शक्ति है हर पुरुष रूपी पिता में? क्या सत्व है? (किसी ने कहा- वीर्य) अमोघ तो तब जब तक कुमार ही रहा हो। फिर नम्बरवार कुमार हैं, जिन कुमारों के लिए क्या वरदान दिया? जो वरदान किसी को नहीं दिया है- ‘‘कुमार जो चाहे सो कर सकते हैं।’’ (अ.वा.21.2.83 पृ.80 अंत) कुमार चाहे तो सारी दुनियाँ को भस्म करना चाहें, तो परमात्म-बॉम्ब छोड़ करके सारी दुनियाँ का देहभान नष्ट कर देंगे। क्या होगा? वो बॉम्ब देह को नष्ट करते हैं और यह बेहद का परमात्म-बॉम्ब क्या करेगा? जबरियन सबके देहभान को नष्ट कर देगा। बाप के ऊपर निश्चय बिठाएगा, निश्चय-बुद्धि का जन्म देगा या अनिश्चय की मौत देगा? (किसी ने कहा-अनिश्चय रूपी मौत) पहले क्या करेगा? देहभान रूपी जो मृत्यु है, देह की मृत्यु होती है ना, वो देहभान खत्म करा देगा; आत्मा रह जाएगी। बाप को पहचानेगी कि नहीं? बाप को तो पहचान लेगी; लेकिन कोई भी माला रूपी संगठन में नम्बरवार बन जाएँगे। तो बताया कि प्रकृति अपनी सारी ताकत दिखाएगी।

कौन है चैतन्य प्रकृति ब्राह्मणों की दुनिया में? (किसी ने कहा- जगदम्बा) अरे, पाँच जड़ तत्वों में कौन-सा तत्व है जिस तत्व में पाँचों ही तत्व समाए रहते हैं? (किसी ने कहा-पृथ्वी) वो जड़ तत्व है और चैतन्य तत्व पृथ्वी कौन है जिसके लिए शास्त्रों में गायन है- धरणी से ही जन्म लेती है, धरणी से ही जन्म लेकर धरणी में ही समा जाती है। क्या नाम दिया? (किसी ने कहा-सीता) शीतल बुद्धि वाली है। जैसे भारत देश में कौन-सा एक प्रदेश है जो बहुत शीतल है? अरे, भारत देश में कौन-सा ऐसा स्थान है जो बहुत शीतल है? (किसी ने कहा-हिमालय) हिमालय शीतल है ना! हिम+आलय; ‘हिम’ माने बर्फ, ‘आलय’ माने घर। वो तो जड़ है। शास्त्रों में उसकी यादगार कोई चैतन्य भी होगा या नहीं होगा? हिमवान। हिमालय पुत्री पार्वती। कौन गाई हुई है? हिमालय पुत्री पार्वती और तुम सब नम्बरवार पार्वतियाँ हो। तो दूसरे नम्बर की भी पार्वती कोई होगी या नहीं होगी? जो मुरली में बोला- ‘‘राधा भी निकली तो सीता भी निकली।’’ (मु.12.6.92 पृ.2 मध्यांत) ऐसे ठण्डे दिमाग वाली कि बर्फीले हिमालय पर नदियों की तरह दौड़ती है या जाम रहती है? (किसी ने कहा- जाम रहती है) ऐसे पार्वती की बुद्धि जाम रहती है। ब्राह्मणों की दुनिया में हिमालय किसका पार्ट है? (किसी ने कहा-ब्रह्मा बाबा का) क्यों? क्योंकि उनके अंदर जो शिव की मुरलियों का ज्ञान-जल है वो चलायमान नहीं होता, बर्फ की तरह स्थिर रहता है यानी मनन-चिंतन-मंथन नहीं कर पाता। और वो ही बच्चाबुद्धि ब्रह्मा की सोल, जगदम्बा का तामसी रूप चन्द्रभाला महाकाली जब बनता है, उसके मस्तक पर प्रवेश हो जाता है। तो बुद्धि और भी जास्ती जाम हो जाती है,

बुद्धि चलती ही नहीं- हम क्या कर रहे हैं! न बाप को पहचानती, न बाप के बच्चों को पहचानने देती और माया बेटी जगदम्बा से पहले ही हाथ मिलाकर बैठी हुई है। एक तो माया की शक्ति बड़ी ज़बरदस्त; लेकिन बाप के बच्चों के योगबल के सामने, अव्यक्त वाणी में बोला-माया तंग आ चुकी है। ''अभी तो माया भी समझ गई है कि अब हमारा राज्य गया कि गया। ... वह भी ब्राह्मण आत्माओं से, श्रेष्ठ आत्माओं से वार करते-2 थक गई है।'' (अ०वा० 14.12.97 पृ०80 अंत) माया बाप के बच्चों से योगबल में टक्कर नहीं ले पाती, तंग आ गई। चैतन्य माया या जड़ माया? चैतन्य माया बेटी, शरीर भी छूट गया। अभी सूक्ष्म शरीर धारण करके ज़्यादा पावरफुल हो गई; क्योंकि सूक्ष्म शरीर धारण करते ही मन-बुद्धि भी सूक्ष्म हो जाती है और जैसे ही मन और बुद्धि रूपी आत्मा सूक्ष्म होती है, वैसे ही बुद्धि में नया प्लान आ जाता है। माया थक चुकी, तंग आ चुकी, शरीर भी छोड़ दिया। थकान शरीर से होती है। शरीर भी छूट गया, थकान की बात खत्म हो गई। फट से नया प्लान बुद्धि में आया, क्या प्लान आ गया? जगत्पिता की जो घरवाली जगदम्बा है, प्रकृति-'प्र' माने प्रकृष्ट, 'कृति' माने रचना-बाप की प्रकृष्ट रचना है, जिसकी रचना में बाप ने एड़ी-चोटी की ताकत लगाई है, तो ज़्यादा पावरफुल बन गई। ऐसी प्रकृति से माया बेटी ने हाथ मिलाय लिया, बुद्धि रूपी हाथ दोनों का मिल गया।

दोनों के बीच में पावरफुल कौन है? माया पावरफुल है? माया थक गई, तंग आ गई। प्रकृति पावरफुल है। माया बेटी है या पत्नी है? बेटी तो है; लेकिन आज की दुनिया में जैसे विदेशियों में बेटियाँ होती हैं ना, ऐसी ही माया बेटी है। नाम क्या दे दिया? माया बेटी। कैसी बेटी? (किसी ने कहा-माया बेटी) बाप की गोद में न आई होती-'मा' माने नहीं, 'आया' माने आया-बाप की गोद में न आई होती तो ज़्यादा अच्छा था। बिचारा ब्रह्मा बाप इतना कमज़ोर पड़ गया! तो माया बेटी जो बेटी है मात-पिता की, तो बेटी ज़्यादा पावरफुल या उसकी अम्मा-जगदम्मा ज़्यादा पावरफुल? अम्मा ज़्यादा पावरफुल होती है। तो बेटी ने बड़ी होशियारी दिखाई। क्या होशियारी दिखाई? (किसी ने कहा-हाथ मिलाय लिया) हाँ, माता से बुद्धि रूपी हाथ मिलाय लिया और माता बुद्धि में ज़्यादा पावरफुल होती है या बाप बुद्धि में ज़्यादा पावरफुल होता है? बाप ज़्यादा पावरफुल होता है; क्योंकि जगत्पिता तो विश्व का मालिक है। माता तो घर सम्भालती है, घर के बच्चाबुद्धि बाल-बच्चों को सम्भालती है। तो जो प्रकृति माता बच्चों के मुकाबले, बच्चियों के मुकाबले ज़्यादा पावरफुल है, उसने माया बेटी से हाथ मिलाय लिया। तो यह बात तो पक्की है कि दोनों के बीच में पावरफुल कौन है? प्रकृति माता ही पावरफुल है; क्योंकि बाप की पहली रचना है। पहली रचना में ज़्यादा ताकत होगी या बाद वाली रचना, छोटे बच्चों में ज़्यादा ताकत होगी? पहली रचना में ज़्यादा ताकत होती है। यह तो ठीक है; लेकिन जो माया बेटी है, वो बेटी बुद्धि में ज़्यादा तीखी होती है या शक्ति में ज़्यादा तीखी होती है? बुद्धि में ज़्यादा पावरफुल होती है। क्यों? बाप की बड़ी बेटी है, जैसे बड़ा बेटा होता है। ज़्यादा बुद्धि में तीखी क्यों? बुद्धि में बेटी ज़्यादा पवित्र बुद्धि वाली होती है या माता ज़्यादा पवित्र बुद्धि वाली होती है? बेटी ज़्यादा पावरफुल इसलिए बन जाती है कि पवित्र बुद्धि होती है। तो जो माया बेटी पवित्र बुद्धि वाली है, वो बुद्धि की प्लानिंग बड़ी बढ़िया बना लेती है। प्लानिंग के आधार पर उसने प्रकृति से हाथ मिलाय लिया और दुनिया में 5 तत्वों का संघात प्रकृति बड़ी पावरफुल है। बाप के बाद सबसे जास्ती पावरफुल कौन है? प्रकृति। कैसे? (किसी ने कहा-पहली रचना प्रकृति माता बाप के साथ ज़्यादा रही है।) हाँ, मास्टर सर्वशक्तिवान बाप के साथ ज़्यादा रही, ये तो बात पक्की हो गई, संग का रंग ज़्यादा लगा; इसलिए पावरफुल हो गई; लेकिन इसका प्रूफ मिलना चाहिए कि प्रकृति ज़्यादा पावरफुल वाकई हो गई? उसका प्रूफ है जो सिक्ख धर्म में खास गाया जाता है (सभी ने कहा-राज करेगा खालसा); क्योंकि वो आत्मा लास्ट जन्म में पंजाब के खून से आती है। जो अव्यक्त वाणी में बोला था, याद है? (किसी ने कहा-राज करेगा खालसा) नहीं, ये भी बोला (किसी ने कहा-पंजाब की धरणी...) हाँ, पंजाब की धरणी कन्या दान में सबसे आगे गई। ''पंजाब की धरनी कन्या दान में श्रेष्ठ निकली अर्थात् महादानी निकली।'' (मु.19.12.78 पृ.137 मध्य) क्या कन्याओं में से कोई कन्या ईश्वर के लिए, ईश्वरीय कार्य में इससे पहले किसी ने दान नहीं की थी? (किसी ने कहा- की थी) अरे, ढेर सारी ब्रह्माकुमारियों के नाम हैं। ब्राह्मणों की दुनिया में पंजाब की कोई कुमारियाँ इतनी ज्ञान में थीं ही नहीं? थीं; लेकिन कोई बाप को नहीं जानती थीं, बाप का परिचय कोई को नहीं था; इसलिए बाप को इस बात का बड़ा फखुर है, जो बच्चे अंदर से समझते हैं- ''मुझ निर्गुण हारे में कोई गुण नाहीं, बाबा! आप ही हमारे ऊपर तरस परोई।'' तो बाबा बड़े फखुर से कहते हैं- अरे, बच्चे! तुम्हारे अंदर कोई गुण हों या न हों; लेकिन बाप एक गुण सबसे जास्ती देखते हैं, जो बाप के लिए बहुत-कुछ मायने रखता है। क्या गुण? बाप की पहचान तुम बच्चों में ही है, जो पहचान दुनिया के और कोई बच्चों में नहीं हो सकती।

तुम बच्चे बाप के डायरैक्ट बच्चे हो, अविनाशी रुद्र-ज्ञान यज्ञकुंड के अविनाशी आत्मा हो, 84 जन्मों में ऑलराउण्ड पार्ट बजाने वाली आत्मा हो। तो बड़े बच्चे हुए या छोटे बच्चे? (किसी ने कहा- बड़े बच्चे) सारा ही बड़े बच्चों का ग्रुप है। रुद्र-ज्ञान-यज्ञ के पहलौटी के बच्चे तुम हो। तो बाप का कहना है कि बाप की नज़र में तुम्हीं सबसे बड़े गुणवान हो। जिसने परमात्मा बाप को जाना उसने सब-कुछ जाना और दुनिया में जिन्होंने बेहद के बाप को नहीं जाना, उन्होंने कुछ नहीं जाना। बाप को पहचानते हैं, बाप को मानते हैं, तो बाप का वर्सा उनको मिलता है। पहचानते ही नहीं, जानते ही नहीं, तो बाप का अव्वल नंबर का सूर्यवंशी वर्सा मिलेगा? नहीं मिलेगा। कृष्ण वाली आत्मा दादा लेखराज को भगवान-भगवती का डायरैक्ट वर्सा मिला? उसी जीवन में जो नर से डायरैक्ट नारायण बनें, नारी से डायरैक्ट लक्ष्मी बनें, उन लक्ष्मी-नारायण, नर-नारायण से मनुष्य-सृष्टि के पहले पत्तों रूपी राधा-कृष्ण को वर्सा मिलता है; भगवान बाप से डायरैक्ट वर्सा नहीं मिलता। क्या वर्सा मिलता है और लक्ष्मी-नारायण जो बाप की डायरैक्ट रचना हैं, उनको क्या खास वर्सा मिलता है? (किसी ने कहा-विश्व की बादशाही) लक्ष्मी-नारायण को और उनकी सारी प्रजा को नंबरवार और उनके परिवार के भांतियों को अतीन्द्रिय सुख का वर्सा मिलता है। क्या ऊँचे-ते-ऊँचा वर्सा? अतीन्द्रिय सुख का वर्सा मिलता है। जो वर्सा सतयुग में जो फर्स्ट जन्म लेंगे, उन राधा-कृष्ण को नहीं मिलता है, अतीन्द्रिय सुख का वर्सा जीवन रहते नहीं मिलता है। जीवन त्यागने के बाद, देह छोड़ने के बाद, जब तक उनका जन्म सतयुग में बच्चे के रूप में न हो तब तक उनको कोई वर्सा नहीं मिलता; उसके बाद सतयुग के पहले जन्म में वर्सा मिलता है। सतयुग के लक्ष्मी-नारायण देहधारी हैं या बिना देह के हैं? (किसी ने कहा- देहधारी) सतयुग में भले ऊँचे-ते-ऊँचे 16 कला सम्पूर्ण देवताएँ हैं; लेकिन देहधारी तो हैं ना! तो देह में जो पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं और पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं, उनमें श्रेष्ठ इन्द्रियाँ कौन-सी हैं? ज्ञानेन्द्रियाँ और ज्ञानेन्द्रियों में सबसे श्रेष्ठ- आँखें। वो आँखों के सुख का वर्सा ले सकते हैं, लेते हैं। राधा-कृष्ण, मनुष्य-सृष्टि के पहले पत्ते; लेकिन अतीन्द्रिय सुख का वर्सा उन्हें जीवन रहते नहीं मिलता। तो जब ऊँचे-ते-ऊँचा युग, सतयुग और उसकी पहली पीढ़ी में आने वालों को ही ऊँचे-ते-ऊँचे भगवंत का ऊँचे-ते-ऊँचा वर्सा नहीं मिलता, तो दुनिया में जो बाद की पीढ़ियों में आएँगे, त्रेता में आएँगे, द्वापर में आएँगे, कलियुग में आकर जन्म लेंगे, उनको नं०वार नीची इन्द्रियों का घटती कला वाला नीचे सुख का ही वर्सा मिलेगा।

तो बताया, ये जो प्रकृति है, वो अभी महाविनाश में अपनी सारी ताकत दिखाएगी। कौन-सी ताकत- पाँच तत्वों की ताकत दिखाएगी या पाँच तत्वों से परे जो परा आत्मिक स्थिति की पावर है, वो दिखाएगी? पहले तो उसकी अपनी योगबल की पावर, सहयोगियों की पावर तो बाद में। जो पृथ्वी माता की पहली पावर है- बड़े-2 भूकम्प लाएगी, जिन बड़े-2 भूकम्पों में दुनिया की सारी बिल्डिंगें, चाहे एक मंज़िल की हों, चाहे बहुमंज़िला इमारतें हों, सब धराशायी हो जाएँगी और दुनिया की ज़्यादा-से-ज़्यादा आबादी कहाँ रहती है- मकानों में रहती है या जंगल में रहती है? (किसी ने कहा-मकानों में) हाँ, तो सब मर-मिटेंगे। कोई पूछे- प्रकृति रूपी माता, धरणी माता ऐसा विकराल रूप क्यों दिखाएगी? कोई कारण होगा तब कार्य होगा या बिना कारण के कार्य होगा? (किसी ने कहा- कारण होगा) क्या कारण बनता है? दुनियावी हिसाब से देखें तो ये कारण बनता है कि दुनिया के जो नास्तिक हैं, सबसे बड़े नास्तिक रशियन्स, जिन्होंने ऐटम बम्ब बनाए, वो ऐटमिक एनर्जी फोड़ेंगे, बड़े-ते-बड़े बॉम्ब फोड़ेंगे तो दुनिया में भयंकर आग लगेगी, आग-ही-आग बरसेगी और पृथ्वी का जो खतरनाक तामसी वायुमंडल बन जाता है उससे पृथ्वी हिल जाएगी। क्या होगा? धरणी रूपी माता, प्रकृति और प्रकृति की भुजाएँ, जो भी पृथ्वी पर छोटी-बड़ी धरणियाँ हैं, बेहद में धरणियाँ कौन हैं? (सभी ने कहा-कन्याएँ-माताएँ) कन्याएँ-माताएँ हिल जाएँगी। मान लो, ग्लानि का परमात्म-बॉम्ब ही फूटता है, अभी सबसे जास्ती ज्ञान में चलने वालों की संख्या कन्याओं की है, अधरकुमारों की है, अधरकुमारियों की है या कुमारों की है? (किसी ने कहा-अधरकुमारियों की है) माताओं की है। तो वो महाकाली जगदम्बा की असंख्य भुजाओं रूपी माताएँ, जब दुनिया में परमात्म-बॉम्ब फटेगा, (टी.वी. में ग्लानि की) भीषण बदबू भरी भयंकर आवाज़ चारों ओर से निकलेगी, बाप के प्रत्यक्षता के लिए ग्लानि रूपी प्रत्यक्षता बॉम्ब। क्या ग्लानि? अरे, जिनको ये बाप कहते हैं, वो ऐसे करता है, वैसे करता है, यह विषपायी है, यह ऐसे करता है, यह उनको नहीं छोड़ता, यह किसको नहीं छोड़ता, ऐसा करता है! यह ग्लानि है या महिमा है? ग्लानि है। जो काम दुनिया के कलियुग के अंत में सारे ही तमोप्रधान प्राणी कर रहे हैं, जानवरों से भी बदतर बने मनुष्यमात्र कर रहे हैं, क्या काम? खासकर कलियुग के अंत में भारतवासी विदेशियों से प्रभावित हो जाते हैं या नहीं हो जाते हैं? (किसी ने कहा-हो जाते हैं) खास भारतवासी राजाएँ तो दो युगों से विदेशियों की व्यभिचारी प्रवृत्ति से प्रभावित हुए पड़े हैं और राजाएँ इतने व्यभिचारी बन गए कि विदेशी इतनी पत्नियाँ नहीं रख सके और भारत के राजाओं ने ढेर-की-ढेर रानियाँ रखीं, तो व्यभिचारी हुए या नहीं हुए? (किसी ने कहा-हुए) यथा राजा तथा भारत की

प्रजा बन गई। अभी वो ही राजाएँ, उनकी सारी प्रजा जो भारतवासी अपन को कहते हैं, वो सब व्यभिचारी बने पड़े हैं। यहाँ तक कि शिव बाप ने ब्रह्मा मुख से निकली वेदवाणी मुरली में ही बोल दिया, हम बच्चों के लिए भी बोल दिया, जिन बच्चों के ऊपर बाप को बड़ा फखुर है कि इन बच्चों में दुनिया का एक बड़े-ते-बड़ा गुण है- बाप की पहचान का, उन बच्चों के लिए बाप कहते हैं- तुम बच्चे भी 10/20/50 दृष्टि के व्यभिचार की भूलें रोज़ ही करते होंगे। ''थोड़ा भी उस क्रिमिनल दृष्टि से देखा, भूल हुई, फौरन नोट करो। 10-20-50 भूलें तो रोज़ करते ही होंगे।'' (मु. 15.8.74 पृ.2 आदि) नहीं तो काउण्ट करो किसी दिन, करते हैं या नहीं करते हैं? (किसी ने कहा-करते हैं) तो सारी दुनियाँ के सारे ही प्राणीमात्र कलियुग के अंतिम जन्म में व्यभिचारी बन जाते हैं, कैसे? विदेशी मनुष्य-आत्माओं के प्रभाव में आने से। तो सारी मनुष्य-सृष्टि का जो बेहद का बाप है, वो बच्चों के मुकाबले बच्चे-जैसा छोटा ही काम करेगा या बच्चों का भी बाप बनकर काम करेगा? जो मुरली में, ब्रह्म वाक्य में बार-2 वाक्य आता है-बच्चे, तुम्हारा बाप आया हुआ है! नई दुनिया बनेगी तो जो श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ (सुख) तुम लेंगे, ज्ञानेन्द्रियों में आँख का सुख हो या उससे भी ऊँचा दुनिया का सर्वोपरि सुख अतीन्द्रिय सुख हो, उस सुख में भी तुम्हारा बाप आया हुआ है और जो नीचे-ते-नीचा कीड़े-मकोड़ों का, जानवरों से भी बदतर राक्षसी सुख है, वो सुख लेने में भी तुम्हारा बाप आया हुआ है। जो शास्त्रों में गायन है कि ज्ञान-सागर का मंथन हुआ, देवताओं ने भी मंथन किया, असुरों ने भी मंथन किया, तो पहले-2 क्या निकला? (किसी ने कहा- हालाहल विष निकला) ये क्या होता है? सारी दुनियाँ के देव-आत्माएँ, दैत्य-आत्माएँ, मनुष्य-आत्माएँ, प्राणीमात्र सब घबराने लगे। अंदर-2 से घबराहट होती है या नहीं होती है? (सभी ने कहा- होती है) जब व्यभिचार दोष के कारण बार-2 शक्ति क्षीण होती है शरीर की, शरीर की कर्मेन्द्रियों की और साथ-2 आत्मा की भी शक्ति क्षीण होती है, जो बाबा कहते हैं- पाँचवीं मार से नीचे गिर जाते हैं अगर काम-विकार में गिरे तो। ''अगर पतित बनते हैं तो (ब्राह्मणों के) हडगुड एकदम टूट पड़ते हैं। जैसे कि 5 मार से गिर पड़ते हैं।'' (मु. 11.3.70 पृ.3 अंत) क्या रिज़ल्ट होता है? सारा ज्ञान बुद्धि में से उड़ जाता है। सभी ब्राह्मण बच्चों ने अच्छी तरह से अनुभव किया या नहीं किया? ज़रूर किया है कि पाँचवीं मार से नीचे गिरने के बाद जो ईश्वरीय ज्ञान बुद्धि में दौड़ना चाहिए, वो ईश्वरीय ज्ञान का मंथन होता ही नहीं और शास्त्रों में शंकर की क्या स्टेज दिखाते हैं? मनन-चिंतन-मंथन की सूक्ष्म स्टेज में सदा ही मस्त रहता है या देहभान में नीचे गिर जाता है? (किसी ने कहा-सदा मस्त रहता है) अमोघ वीर्य बनकर रहता है या जो सत्व है आत्मा का, शरीर का, इन्द्रियों का, वो पतन की ओर चला जाता है? जो शास्त्रों में गाया हुआ है- 'अमोघ वीर्य'। कारण बताया, ब्राह्मणों का मंथन क्यों नहीं चलता और शंकर का सबसे जास्ती क्यों चलता है? शंकर को सूक्ष्मवतन की सबसे ऊँची स्टेज में क्यों दिखाया जाता और दुनिया के जो तीन बड़े-ते-बड़े देवताएँ हैं, उनमें भी उनको टाइटिल मिला हुआ है- देव-देव महादेव; ब्रह्मा देव, विष्णु देव और शंकर महादेव, किस आधार पर मिला हुआ है? बड़े-ते-बड़ा महादेव। देव माने दाता, देने वाला या लेने की इच्छा रखने वाला? नहीं। किस बात का दाता? सब-कुछ इस दुनिया में जो भी श्रेष्ठ है, उसका दाता है। जो दाता होता है वो लेने की इच्छा रखता है? नहीं रखता है। तो ईश्वरीय ज्ञान में ज़्यादा मंथन किसका चलेगा? दुनियावी सुखों को लेने की इच्छा जिसकी होगी, उसकी बुद्धि ज्ञान के मंथन में ज़्यादा चलेगी या दुनियावी सुखों के लिए- इच्छा मात्रम् अविद्या अर्थात् इस दुनिया के कोई सुख लेने की इच्छा नहीं, सिवाय ईश्वरीय ज्ञान के, सिवाय ईश्वर के दिए हुए सुख के और जब से बाप को पहचाना होगा, कोई भी इच्छा नहीं- 'नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा', उसका मंथन ज़्यादा चलेगा? वो एक ही बड़े-ते-बड़े देवता की बात नहीं है, 84 जन्मों में सहयोगी बन करके रहने वाली 8 भुजाओं रूपी आत्माओं के लिए भी यही बात लागू होती है- जो या 8 फरिश्तों या अष्टदेव रूप में गाए जाते हैं। जब से इस एडवांस ज्ञान में आए होंगे, जब से बाप को पहचाना होगा, उनकी खासियत देखने में आवेगी- 'नष्टोमोहा'। तन भी तेरा, तन और तन की इन्द्रियों की जो सेवा है वो भी तेरे लिए; देह के अज़ीज़-ते-अज़ीज़ सम्बंधियों के लिए कुछ भी नहीं, शुरुआत से ही इतने पक्के होंगे। जो भी जीवन में टटपुँजिया धन कमाया होगा, उसकी सारी शक्ति ईश्वरीय सेवा में लगाएँगे; देह और देह के सम्बंधियों की सेवा में नहीं, देह के पदार्थों की लालसा में नहीं। बड़े प्यार से खिचड़ी खाएँगे, ऐसे नहीं जैसे कोई-2 बंगाली लोग कहते हैं- अरे, मछली नहीं मिलेगी तो हमें ईश्वर का ज्ञान नहीं चाहिए। सम्बंधियों की या संपर्कियों की, जो भी दोस्तों की, सखा-सहेलियों की पावर उनके मुट्ठी में होगी, वो सारी ईश्वर के लिए अर्पण करेंगे, अपने लिए नहीं। कैसी भी परीक्षाएँ आ जाएँ, देह के साथियों से भीख नहीं माँगेंगे, ईश्वरीय आधार पर चलेंगे। जो भी मन के संकल्प हैं, वो ईश्वर की श्रीमत के अनुकूल चलेंगे। ऐसी आठ आत्माएँ जो महादेव की आत्मा के जन्म-जन्मांतर के सहयोगी बनते हैं, उनमें भी ये खासियत बताई कि मनन-चिंतन-मंथन की सारी शक्ति ईश्वरीय सेवा में लगाएँगे। तो मन-बुद्धि रूपी आत्मा की ऊँची स्टेज हुई ना! ईश्वर बाप के सहयोग से ऐसी ऊँची स्टेज में रहने वाली आत्माएँ प्रकृति के प्रभाव से परे हो करके रहेंगी, ईश्वर

बाप की मत पर चलने के आधार पर और प्रकृति कौन-सी पावर दिखाएगी? अरे? परमेश्वर शिव ने मनुष्य-सृष्टि के बाप प्रजापिता को जो निराकारी ज्ञान दिया है, वह मनुष्यमात्र के लिए है, विधर्मी-विदेशी धर्मपिताओं के लिए भी है। तो उन्हें 500-700 करोड़ का बाप-आदम कौन-सा वर्सा देगा? (किसी ने कहा-निराकारी ज्ञान का वर्सा) वह देहाभिमानी धर्मपिताएँ उस प्रजापिता की मत को ठुकरा देगी, अपनी मत पर चल पड़ेगी; क्योंकि उनके नक्शेकदम पर चलने वाले जो बच्चे हैं, उनके जो सहयोगी हैं, उनकी भी देह में होता है देहभान। पंचविकारी रावण के पाँच मुखों को पैदा करने वाला देहभान रूपी गधा है, जो रावण के सर पर सवार रहता है। रावण के चित्रों में दिखाते हैं। परा प्रकृति रूपी जो माता है, उसके सर पर भी कौन सवार होता है? अरे? (किसी ने कहा-ब्रह्मा) वो ही देहभान रूपी अधूरा चंद्रमा; सम्पूर्ण ज्ञान-चंद्रमा नहीं। वो देहभान ही पाँच तत्वों का मूल है। देह रूपी मिट्टी, जल, वायु, अग्नि रूपी ये जो देवता रूप में परा प्रकृति की आत्माएँ दिखाई जाती हैं, ये आत्माएँ जड़त्व बुद्धि वाली होती हैं, उसी प्रकृति की गोद में खेलने वाली हैं। ये आत्माएँ प्रकृति रूपी माता को अपनी सारी शक्तियाँ तिरोहित करती हैं। सारे संसार में अग्नि भयंकर प्रभाव दिखाती है। ऐटम बमों की आग में तो सारी दुनियाँ तपेगी ही; सूर्य में से जो अग्नि का ताप निकलता है, उससे भयंकर तपित होगी। जल, सारी पृथ्वी पर जलमयी लाएगा, सारी पृथ्वी पर जलमयी हो जाएगी, जैसे आग बरसती है ना! वो तो स्थूल आग है, जो द्वापरयुग से द्वैतवादी धर्मपिताओं के आने से शुरू होती है; क्योंकि धर्मपिताओं के आने से कामाग्नि भी शुरू होती है। देवताओं में कामाग्नि नहीं होती थी। ये कामाग्नि सारे संसार में भयंकर रोला मचाएगी, ऐसे ही ये जलमयी ज्ञान-जल सारी दुनियाँ में ऐसी भयंकर बाढ़ लाएगा, जिस बाढ़ में सारे विदेशी धर्मखण्ड, 2500 साल पहले थे ही नहीं, न सृष्टि के आदि में थे और न अब अंत में रहेंगे, सब डूब जाएँगे। जलमग्न सारी सृष्टि हो जाएगी। जब बाढ़ आती है तो क्या खास बात हो जाती है? देह-अभिमान की मिट्टी अच्छे से पानी में मिल जाती है। तो अभी क्या बताया? बच्चों में देहभान बहुत बढ़ गया है। उस देह-अहंकार के कारण अपने को ही बाप समझ बैठते हैं। जैसे इस सृष्टि-वृक्ष का बड़े-ते-बड़ा बच्चा कौन, पहला पत्ता कौन? (किसी ने कहा- ब्रह्मा बाबा) 16 कला कृष्ण बच्चा। वो गीता माता का पति बन करके बैठ जाता है। अपने को देहभान के आधार पर क्या समझता है? अरे? (किसी ने कहा- गीता का भगवान) मैं ही गीता माता का साकार भगवान हूँ, मेरे अलावा दुनिया में कोई भी गीता माता का साकार भगवान, गीता-पति नहीं हो सकता। तो आज संगमयुगी दुनिया में उस बड़ी माता ब्रह्मा के (बच्चे के) रूप में पार्ट बजाने वाले को सभी माताएँ फॉलो कर रही हैं। सब माताओं के बड़े बच्चे, खुदा-न-खासता बाप न रहे, पति न रहे, तो (माताएँ) किसके कण्ट्रोल में आ जाती हैं? बच्चे के कण्ट्रोल में आ जाती हैं। घर-2 में गीता-पति भगवान बने बैठे हैं बच्चे। माताओं को उन बच्चों का बड़ा फखुर रहता है। सबसे बड़ा बच्चा कौन? (किसी ने कहा- कृष्ण बच्चा) वर्तमान संगमयुग में ब्रह्मा, कृष्ण तो सतयुग में होगा, वर्तमान में क्या? दादा लेखराज ब्रह्मा, जो रावण के सिर के ऊपर साक्षात् गधा रूप में देहभान दिखाया जाता है। कितना भी ज्ञान-स्नान कराओ, फिर भी क्या करेगा? देहभान की मिट्टी में लोट जाता है। वो बच्चा रूपी देहभान का पुतला ज्ञान-जल में मिक्स हो जाएगा जब दुनिया का बड़े-ते-बड़ा बॉम्ब परमात्म-बॉम्ब फटेगा। क्या रिज़ल्ट होगा? नहीं समझ में आया! अरे, बड़े-ते-बड़ा बॉम्ब फटेगा, तो धरणी डोल जाएगी या नहीं डोलेगी? (किसी ने कहा- डोलेगी) धरणी डोलेगी तो धरणी माना पृथ्वी के नॉर्थ पोल-साउथ पोल पर जो मीलों ऊँचे बर्फ के पहाड़ हैं, वो दरकने के बाद समंदर में आएँगे या नहीं आएँगे? (किसी ने कहा-आएँगे) तो समंदर का जलस्तर बढ़ेगा या घटेगा? (किसी ने कहा-बढ़ेगा) और पृथ्वी जो पाँच जड़ तत्वों में से मुख्य तत्व है, वो चलायमान होगी, जिन्हें चैतन्य में हम कहें- माताएँ रूपी धरणी। ग्लानि का परमात्म-बॉम्ब फटेगा तो ज़्यादा-से-ज़्यादा बंधन में कौन आएँगी? माताएँ बंधन में आ जाएँगी। तो उनका दिल डोलेगा या नहीं डोलेगा? (किसी ने कहा- डोलेगा) इसलिए बाप कहते हैं, ब्रह्मा बाप के द्वारा समझो कहलवाते हैं- ''अचल रहना है, हलचल में नहीं आना है।'' कैसा भी बड़े-ते-बड़ा ग्लानि का परमात्म-बॉम्ब फटे; लेकिन क्या करना है? अचल रहना है, अटल रहना है; क्योंकि चैतन्य परा प्रकृति तो अपनी सारी पावर दिखाएगी। देहभान की मिट्टी की भी पावर दिखाएगी। जो ज्ञान-जल है, वो सारी पृथ्वी पर बाढ़ लाएगा। सारी पृथ्वी जलमयी हो जाएगी और जलमयी में क्या होगा? (किसी ने कहा- डूब जाएँगे) कैसा जल होगा? मटमैला। जो भी 500-700 करोड़ मनुष्य-आत्माएँ देहभान वाली हैं, जिनमें अग्नि रूपी देवता भयंकर कामाग्नि पैदा कर देगा, तो समंदर का जल/सागर का जल ब्वॉइल्ड वाटर बनेगा या नहीं बनेगा? (किसी ने कहा- बनेगा) ऐटम बम फटेंगे, गर्मी बढ़ेगी तो समंदर का पानी ब्वॉइल्ड वाटर बनेगा, जिसमें नॉर्थ पोल/साउथ पोल के बड़े-2 मीलों ऊँचे बर्फ के पहाड़ दरक कर आ जाएँगे, जल का स्तर ऊँचा उठेगा और अंतिम स्थिति ऐसी होगी, जिसमें पृथ्वी रूपी धरणी माता का उपग्रह; पृथ्वी का उपग्रह चन्द्रमा, जो पृथ्वी माता का बच्चा उपग्रह है, पृथ्वी ग्रह में आ करके प्रशांत महासागर रूपी गोद में गिरेगा, तो प्रशांत महासागर का जो जलस्तर

है, जो दुनिया का बड़े-ते-बड़ा जल का जमावड़ा है- प्रशांत महासागर, वो जलस्तर और ज़्यादा ऊँचा उठेगा। उसमें दुनिया के जितने भी बड़े-2 विधर्मी धर्मखण्ड हैं, विदेशी धर्मखण्ड, वो सब समंदर के अंतराल में समा जाएँगे और पृथ्वी का जल इतना बढ़ जाएगा, जिसमें सारे प्राणी शरीर से डूब मरेंगे। वो मटमैले ज्ञान-जल में डूब मरेंगे।

भले कोई में ज़्यादा योगबल की पावर हो, योगबल की पावर से भोगबल बढ़ाने वाले कामाग्नि को कण्ट्रोल करने वाले कैसे भी बड़े-2 बच्चे योगी हों, वो सब हताश हो जाएँगे और मटमैला जल ज्ञान-जल में सब अंधे हो जाएँगे। दुनिया में ऐसा प्राणी कौन-सा होता है, जो बहुत कामी माना जाता है? (किसी ने कहा-साँप) जो साँप कहो, साँपों का राजा- 'वासुकि', क्या नाम दिया? (किसी ने कहा- वासुकि) वो मनुष्य-सृष्टि के बाप के गले को भी जकड़ लेता है। जिस साँप में बहुत कामाग्नि होती है, वो प्राणी एक ही प्राणी है और उनका राजा, साँपों का राजा 'वासुकि', जगत्पिता के गले को जकड़ लेता है। किस बात में? अरे! कौन-से विकार से जकड़ लेता है? (सभी ने कहा- काम-विकार से) इतना जकड़ लेता है और वो बाप मस्त रहता है। कोई के गले में साँप जकड़ मार जाए तो घबराएगा, प्राण निकल जाएँगे, जैसे फाँसी लग गई हो; लेकिन ये जो जगत्पिता है, 'जगतम् पितरम् वंदे', जगन्नाथ कहा जाता है, जगत्पिता शंकर (साँप) की जकड़ होते हुए भी मस्त रहता है। किस प्रभाव से? उसके अंदर क्या प्रभाव काम करता है, कौन-सी प्रतिभा काम करती है? योगबल; क्योंकि वो योगीश्वर कहा जाता है। तीन ही नाम हैं जिनको दुनिया में 'योगीश्वर' का टाइटल मिला है शास्त्रों में- एक शंकर, दूसरा कृष्ण- योगीराज और तीसरा ब्रह्मा का बड़ा मानसी पुत्र, सृष्टि का पहला-2 बच्चा- सनत्कुमार। जिस सनत्कुमार के नाम पर हमारे धर्म का नाम 'सनातन धर्म' पड़ता है। योगबल के आधार पर सत्य सनातन धर्म की स्थापना, सत्य सनातन धर्म की राजधानी तैयार होती है। ऐसी सशक्त राजधानी, जिस राजधानी के संगठन में खासियत बताई? ''एक भी विकारी पाँव नहीं रख सकेगा।'' दुनिया का कोई ताकतवर-से-ताकतवर मनुष्य हो, धर्मपिता ही क्यों न हो, वो धर्मपिताएँ संगठित रूप में रावण के सर की तरह इकट्ठे क्यों न हो जाएँ, तो भी उसकी राजधानी को हिला नहीं सकेंगे। ऐसी सशक्त ईश्वरीय राजधानी होगी।

ब्रह्म वाक्य में/मुरली में जो बोला है कि मैं जब आता हूँ तो धक्क से तुम्हारी राजधानी स्थापन कर देता हूँ। ''यह तो एक ही धक्क से एकदम स्वर्ग बना देते हैं।'' (मु.2.1.63 पृ.6 आदि) अरे! 80 साल हो गए हम बच्चों को ज्ञान में चलते-2, हम बच्चे दुनिया में ढिंढोरा पीट रहे हैं- हमें भगवान बाप मिल गया, भगवान बाप इस सृष्टि पर आया है और बाप कहते हैं- मैं आता हूँ तो मेरे आने की निशानी धक्क से राजधानी स्थापन कर देता हूँ। ऐसी क्या शक्ति है, जो गायन है- राजा जनक को एक सेकेण्ड में जीवन्मुक्ति मिल गई? 'जन' माने जन्म, 'क' माने करने वाला अर्थात् सारी मनुष्य-सृष्टि का नया जन्मदाता। तो इस संसार में उस निराकार शिव बाप का साकार प्रजापिता द्वारा प्रत्यक्षता रूपी जन्म हुआ। ब्रह्माकुमारियों को 80 साल हो गए उसका जन्मदिन मनाते-2। हर वर्ष नंबर बताते हैं- 71वाँ जन्मदिवस, 75वीं शिवजयंती, 78वीं शिवजयंती; ब्राह्मणों की दुनिया में मनाते हैं या नहीं मनाते हैं? (किसी ने कहा-मनाते हैं) तो क्या वाकई शिव बाप आया कि नहीं आया? (किसी ने कहा- अभी गुप्त में आया) बच्चे की आत्मा, माता के गर्भ में गुप्त में आती है तो उसका प्रत्यक्षता रूपी जन्म नहीं मनाया जाता। बच्चा दुनिया में बाहर आता है, तो सब-कोई कहता है- बच्चे का जन्म हुआ, पड़ोसी भी आवाज़ सुनेगा, भले बच्चे को देखे नहीं, ऊँआ-2 की आवाज़ सुनेगा, बोलेगा घर वालों को- पड़ोस में बच्चा आ गया। तो प्रत्यक्षता रूपी जन्म हुआ या नहीं हुआ? (किसी ने कहा-हुआ) कानों से सुनेगा तो भी कहेगा- आ गया और आ करके इन स्थूल आँखों से देखेगा तो भी कहेगा- आ गया। बाबा ने ब्रह्मा मुख से ही बताया, अव्यक्त वाणी में भी बताया- बाप की प्रत्यक्षता की निशानी ऐसे ही स्पष्ट देखने में आवेगी, जैसे महात्मा बुद्ध का चेहरा अव्यक्त दिखाई देता है, क्राइस्ट के चेहरे पर अव्यक्त स्थिति दिखाई देती है। आत्मा निराकार दिखाई देती है या देह से, चेहरे से देहभान टपकता है? (सभी ने कहा-आत्मा निराकार) गुरुनानक में देहभान की स्थिति दिखाई देती है कि आत्मा का स्वरूप टपकता है? (सभी ने कहा- आत्मा का) आत्मिक स्थिति, रूहानी स्टेज। तुम बच्चों की नम्बरवार अव्यक्त स्टेज ही बाप को प्रत्यक्ष करेगी- यह महावाक्य बोला है। ''अब सर्विस का लक्ष्य यही हुआ कि बाप (को) प्रत्यक्ष करना। वह तब कर सकेंगे जब पहले अपने को ज्ञान-योग के प्रत्यक्ष प्रमाण बनावेंगे। जितना स्वयं को प्र(त्यक्ष) प्रमाण बनावेंगे उतना बाप को प्रत्यक्ष कर सकेंगे।'' (अ॰वा॰6.8.70 पृ॰2 अंत) जैसे धर्मपिताओं की अव्यक्त स्टेज धर्मपिताओं को प्रत्यक्ष कर गई, ऐसे ही जो दुनिया के ग्रेट फादर्स कहे जाते हैं- धर्मपिताएँ, उन

धर्मपिताओं का भी बाप, सारी मनुष्य-सृष्टि का बाप, ग्रेट-2 ग्राण्ड फ़ादर, ये टाइटिल साकार का है या निराकार का? (किसी ने कहा- साकार का) ग्राण्ड फादर बाबा बाप के बाप को कहा जाता है।

शिवबाप का हम आत्मा रूपी भाई-भाइयों के साथ बाप का संबंध है या बाबा का संबंध है? (किसी ने कहा-बाप का) शिव ग्राण्ड फ़ादर है या सिर्फ बाप है? क्या है? (किसी ने कहा-आत्माओं का बाप) सिर्फ़ बाप है, बाबा नहीं। कोई मुकर्रर मनुष्य-तन में जब प्रत्यक्ष होता है और संसार में मनुष्य-तन के द्वारा प्रत्यक्षता होती भी है, तब दुनिया जानती है कि ये ग्रेट फादर्स- इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट का भी बाप है, ग्राण्ड फ़ादर है। बाप का वर्सा मिले या न मिले; लेकिन डाडे का वर्सा माना बाबा/ग्राण्ड फ़ादर का वर्सा बच्चों को ज़रूर मिलता है। निराकार आत्माओं का निराकारी बाप, निराकारी ज्ञान का वर्सा देता है; साकार मनुष्यों का बाप, साकार स्वर्ग का वर्सा देता है। स्वर्ग साकार है। स्वर्ग का रचयिता भी साकार होगा। इसीलिए स्वर्ग में होती है जीवन्मुक्ति। इसी दुनिया में हम बच्चों को नं०वार अपना वायब्रेशन संगठन में सुधार कर स्वर्ग बनाना है। हम संगठन में वायब्रेशन कैसा बनाएँगे? आत्मिक स्थिति का वायब्रेशन बनाएँगे, जो सतयुग में हम जन्म लेने लायक बनें, 'अंत मते सो गते'।

साधारण मृत्यु तो जन्म-जन्मांतर होती रही, अंतिम महामृत्यु के समय, महाविनाश के टाइम पर जब सबके अपने-2 शरीर छूटेंगे, तो उस समय मन-बुद्धि रूपी आत्मा में हमारा वायुमण्डल/वायब्रेशन सुख का होना चाहिए या दुख का होना चाहिए? (किसी ने कहा- सुख का होना चाहिए) सुख के वायब्रेशन में शरीर छोड़ेंगे, तो सुख की दुनिया में जन्म लेंगे; इसलिए बोला-नरक में मरेंगे तो नरक में जन्म लेंगे, स्वर्ग में मरेंगे तो स्वर्ग में लेंगे। ''जानते हो नर्क में मरा तो नर्क में ही कहीं जन्म लेगा। हम तो स्वर्ग में जन्म लेंगे।'' (मु.5.4.73 पृ.3 आदि) सवाल पैदा (होता है)- इस दुनिया में तो नरक ही है, नरक में सारे ही शरीर छोड़ रहे हैं, तो स्वर्ग में जन्म कैसे ले लेंगे? (किसी ने कहा-आत्मिक स्थिति...) हाँ, आत्मिक स्थिति में वायब्रेशन बनाने की बात है। सुख का वायब्रेशन बनाएँ। सुख का वायब्रेशन बनाने के लिए पहले सुखदाता/सुख की दुनिया के रचयिता बाप को जानें, जो बाप का रूप, बाप की आकृति सारी दुनियाँ, देश और विदेशों की खुदाइयों में मिली हैं और सबसे जास्ती तादाद में मिली हैं और सारे भारत के गाँव-2 में/शहर-2 में उस आकृति की यादगार शिवालय में पूजी जाती है। कौन-सी? शिवलिंग, जिसका परिचय देने के लिए मुरली में बाप बार-2 कहते रहे- बच्चे, बाप का परिचय दो। ''तुम पहले-2 बाप का परिचय दो।'' (मु.10.6.65 पृ.3 आदि) त्रिमूर्ति के चित्र में ऊँचे-ते-ऊँचा बाप का परिचय दो, जिस बाप की यादगार में 'त्रिमूर्ति शिव' कहा जाता है, जिसकी यादगार में दिल्ली में त्रिमूर्ति हाउस बना है, शहर-2 में 'त्रिमूर्ति रोड' नाम रखा जाता है। तो हाउस एक होगा या दो-तीन-चार होंगे? एक ही हाउस का नाम- त्रिमूर्ति हाउस और रोड माने रास्ता; एक ही रास्ता बताने वाला प्रैक्टिकल में एक होगा या तीन-चार रास्ता बताने वाली आत्माएँ होंगी? एक ही आत्मा होगी।

तो वो एक आत्मा है, जिसकी यादगार द्वैतवादी युग द्वापर के सात्विक समय आदि में सोमनाथ के मंदिर में दिखाई गई। हर युग चार अवस्थाओं से पसार होता है। द्वापर के आदि में वो सात्विक यादगार बनी थी। सोमनाथ के मंदिर में पत्थर के लिंगाकार में हीरा दिखाया गया था। वो हीरा किसकी यादगार है? (किसी ने कहा-निराकार की) निराकार हीरो पार्ट बजाता है? (किसी ने कहा- नहीं बजाता) हीरा तो हीरो पार्टधारी की यादगार है और हीरा पत्थर है या नहीं? (किसी ने कहा-पत्थर है) जैसे और रत्न पत्थर होते हैं, वैसे हीरा भी बेशकीमती माना तो जाता है; लेकिन है तो पत्थर या नहीं? (सभी ने कहा-है) और शिव ज्योतिबिन्दु, आत्माओं का बाप निराकार है, जन्म-मरण के चक्र से न्यारा है; इसलिए त्रिकालदर्शी है, वो पत्थरबुद्धि बनता है? (किसी ने कहा- नहीं बनता) तो पत्थर क्यों कह दिया? हीरा, जो सोमनाथ के मंदिर में लिंगाकार पत्थर में जड़ा हुआ था, वो हीरा हीरो पार्टधारी की यादगार है। वो सुप्रीम सोल/शिवबाप की आत्मा, दादा लेखराज ब्रह्मा के तन में ब्रह्म वाक्य/वेद वाक्य बोलकर गई, वेद वाणी बोलकर गई, वो वाक्य भूल गया! न मैं पूज्य बनता हूँ, न मैं पुजारी बनता हूँ। ''न मैं पुजारी हूँ, न पूज्य बनता हूँ।'' (मु.ता. 28.06.06 पृ.3 आदि) तो सोमनाथ के मंदिर में जो लिंगाकार पत्थर में हीरा रखा हुआ था, वो शिव की यादगार है, अखूट ज्ञान के भण्डारी की यादगार है या अखूट योगी की यादगार है? अखूट योगी योगेश्वर शंकर की यादगार है। जब तक संगमयुग रहेगा, उसका योग अखूट है; इसलिए मुरली में बोला- छोटा रूप याद नहीं आता है, बिन्दु-रूप याद नहीं आता है, तो बड़े रूप को याद करो। ''भल बिन्दी बुद्धि में याद ही नहीं आती। अच्छा, शिव को तो याद करो तो पाप कटे। बड़े रूप पर हिरे हुए हो, बड़ा ही सही।'' (रात्रि मु.ता.17.1.69 पृ.1 मध्यांत) अरे! बड़े रूप को पहचाना या नहीं पहचाना? (किसी ने कहा-पहचाना) पहचाना है तो याद

करो। बड़े रूप को भी याद करेंगे, तो बड़ा रूप साकार की यादगार है। साकार को सगुण कहा जाता है। रामायण में भी लिखा है- ''सगुणहिं अगुणहिं नहिं कछु भेदा।''- साकार और निराकार में कोई भेद नहीं है; जो साकार है वो ही निराकार है, जो निराकार है वो ही इस संसार में साकार है। क्यों? क्योंकि इस दुनिया में आने के बाद निराकार शिव का विरुद है- मैं तुम बच्चों को आप समान बनाकर जाऊँगा। ''तुम बच्चों को आप समान बनाकर साथ ले जाते हैं।'' (मु.ता.10.9.73 पृ.3 मध्य) नम्बरवार क्या बनाकर जाएगा? (किसी ने कहा- आप समान) माने? निराकारी-निर्विकारी-निरहंकारी अव्वल नम्बर कोई बच्चे को ज़रूर बनाएगा। जिस अव्वल नम्बर बच्चे को निराकारी-निर्विकारी-निरहंकारी, आप समान बना(कर), मास्टर सर्वशक्तिवान बनाकर जाता है, उसके लिए ही कहा और साथ-2 नम्बरवार सब बच्चों के लिए कहा, मैं सर्वशक्तिवान तो हूँ; लेकिन मास्टर सर्वशक्तिवान नहीं हूँ। ''सर्वशक्तिवान तो वास्तव में एक ही है, बाप जो तुमको भी सर्वशक्तिवान बनाते हैं। ... तुमको मास्टर सर्वशक्तिवान कहेंगे।'' (मु.ता.27.12.73 पृ.5 मध्य) मास्टर माने प्रैक्टिकल जीवन में शक्ति धारण करने वाला। ज्ञान थ्योरी है, तो थ्योरी का अखूट भण्डार कौन है? निराकार आत्माओं का बाप शिव, प्रैक्टिकल नहीं कर सकता। क्यों? प्रैक्टिकल शरीर के द्वारा होता है, प्रैक्टिकल शरीर की इन्द्रियों के द्वारा होता है। क्यों नहीं प्रैक्टिकल कर सकता? क्योंकि उसको अपना शरीर नहीं है; इसलिए कोई मुकर्रर देह में प्रवेश करता है, रथ में प्रवेश करता है। अर्जुन की आत्मा को वश में किया या रथ को कण्ट्रोल किया? क्या कण्ट्रोल किया? (किसी ने कहा- आत्मा को) आत्मा को स्वतंत्र नहीं छोड़ा? श्रीमत पर चलना चाहो तो चलो, न चलना चाहो, न चलो। ''स्वतंत्र रहो, स्वतंत्र रहने दो''- यह नियम शिवबाप ने नहीं अपनाया? अपनाया ना! अरे! अपनाया। उसने तन को कण्ट्रोल किया। याद की भी यही बात है, यही रहस्य है, यही राज़ है। बाँधेली माताओं का तन भले कोई कण्ट्रोल कर ले; लेकिन मन-बुद्धि रूपी आत्मा को कोई कण्ट्रोल नहीं कर सकता, ईश्वर भी आत्मा को कण्ट्रोल नहीं करता। शिवबाप, अर्जुन के शरीर रूपी रथ को कण्ट्रोल करता है; आत्मा को स्वतंत्र छोड़ता है- चाहो तुम अच्छे संकल्प करो, चाहो तुम व्यर्थ, आसुरी संकल्प करो। अच्छे संकल्प करोगे, कर्मेन्द्रियों से अच्छे कर्म करोगे, अच्छी वाचा चलाओगे, श्रीमत के अनुकूल चलाओगे तो जन्म-जन्मांतर सुखी रहोगे; नहीं चलाओगे तो जन्म-जन्मांतर दुखी हो जाओगे। तो आत्मा को कण्ट्रोल किया या तन को कण्ट्रोल किया? तन को कण्ट्रोल किया और तन जड़ होता है या चैतन्य होता है? (किसी ने कहा- जड़) माने प्रजापिता का जो तन है, वो दुनिया का सबसे बड़ा पत्थर है। त्रिमूर्ति के चित्र में भी ध्यान से देखो, ब्रह्मा कैसे बैठा है और शंकर का तन कैसे बैठा हुआ दिखाया गया? (किसी ने कुछ कहा-...) बोला भी है मुरली में- जिसे तुम बच्चे भगवान बाप समझते हो, साकार-निराकार का मेल समझते हो, उसमें से शिव को हटा दो, तो क्या बचेगा? शव बचेगा, मुर्दा बचेगा। मुर्दा जड़ होता है या चैतन्य होता है? (किसी ने कहा-जड़) जड़ होता है माना अंतिम जन्म में आ करके, मात्र देहाभिमानी विदेशियों-विधर्मियों-व्यभिचारियों के संग के रंग में आ करके मनुष्य-सृष्टि का बाप शरीर से इतना ज़्यादा व्यभिचारी हो जाता है कि पत्थर-जैसा हो जाता है। 80 साल हो गए शिवबाप को समझाते-2; लेकिन उस पत्थर बुद्धि की बुद्धि में वो प्वॉइण्ट बैठता ही नहीं। कौन-सा प्वॉइण्ट? मुरली का वो प्वॉइण्ट है- ''अमृत छोड़ विख काहे को खाए।'' (मु.ता.7.11.70 पृ.1 मध्यादि) शिवबाप ज्ञानामृत दे रहे हैं प्रैक्टिकल जीवन में इन्द्रियों से धारण करने के लिए, वो इन्द्रियों से ज्ञान की मुख्य बात क्यों नहीं धारण करता? मुख्य ज्ञान क्या है? 'पवित्र बनो, योगी बनो।' तो शंकर का विषपायी का जो पार्ट है, वो विष पीना छोड़ता है? दुनिया के सारे काम पवित्रता से सम्पन्न होते हैं, प्योरिटी से सम्पन्न होते हैं या अपवित्रता से सम्पन्न होते हैं? पवित्रता से दुनिया के सारे काम सम्पन्न होते हैं। पवित्रता ही सत्व है।

पवित्रता ही सत् है। पुरुष उस सत् या सत्व की शक्ति को परिपूर्ण नौजवान होने तक इस कलियुगी दुनिया में धारण करके नहीं रह सकता। कौन? पुरुष रूप या स्त्री रूप, माता रूप या पिता रूप? सब पुरुष दुर्योधन-दुःशासन हैं। सब स्त्रियों का नाम क्यों नहीं लिया? क्योंकि जो माताएँ-कन्याएँ हैं, वो पुरुष के उस सत्व को सच्चाई से जीवन में धारण कर सकती हैं। जो धारण करती है वो सती कही जाती है। वो सती में इतनी शक्ति है कि उस सती की सतीत्व शक्ति के आधार पर भगवान और भगवान के परिवार जन भी उसके पति जलंधर राक्षस का कोई बाल-बाँका नहीं कर सके। इतनी सत/सत्व को धारण करने वाली सती की शक्ति है और वो सती नारियाँ, सती कन्याएँ भारत में ही हुई हैं। 'भा' माने ज्ञान की रोशनी, 'रत' माने लगा रहने वाला। ज्ञान को प्रैक्टिकली धारण करने में जो जीवनभर लगी रही, वो ही सती है। ज्ञान की रोशनी को प्रैक्टिकली धारण करने में शंकर नहीं लगा रहता? शिवबाप का बच्चा, बड़ा बच्चा है या नहीं? (किसी ने कहा-है) वो नहीं लगा रहता? (किसी ने कहा- लगा रहता है) लगा रहता है! है वो राम की आत्मा कही गई। राम, बाप को कहा जाता है, मनुष्य-सृष्टि का बाप है; उस बाप के लिए क्या बोल दिया है, पता है? नहीं पता। राम

ही (किसी ने कहा-रावण बनता है)। जब मनुष्य-सृष्टि का बाप, राम ही जीवनभर उस सत रूपी ज्ञान कहो, सत रूपी वीर्य कहो, सत्व कहो; क्योंकि पुरुष है, धारण नहीं कर सकता। बोलो, पुरुष धारण कर सकता है? दुनिया का कोई पुरुष जीवन में धारण नहीं कर सकता; इसलिए सब पुरुष दुर्योधन-दुःशासन हैं, चाहे ब्रह्मा हो, चाहे शंकर हो, दुनिया का कोई भी बड़े-ते-बड़ा देवता या धर्मपिता हो, ग्रेट फ़ादर ही क्यों न हो; लेकिन वो सत्व की शक्ति को, चाहे वो स्थूल शक्ति हो, चाहे वो ज्ञान की निराकारी सूक्ष्म शक्ति हो, जो दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति है। ''न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रम् इह विद्यते।'' (गीता 4/38)- इस संसार में ज्ञान के समान कुछ भी पवित्र नहीं है; लेकिन कोई धारण कर सके तो। नहीं समझ में आया! वो है सूक्ष्म शक्ति- ज्ञान और वो है स्थूल शक्ति- सत्व, जो पुरुषों में सत्व होता है- वीर्य, उसको पुरुष जीवनभर धारण नहीं कर सकता, चाहे सूक्ष्म सत्/ज्ञान की शक्ति हो और चाहे स्थूल शक्ति हो। कौन धारण कर सकता है? अपनी पर उतर आए, पक्का निश्चय कर ले, तो माता धारण कर सकती है, कन्या धारण कर सकती है; जीवनभर पुरुष धारण नहीं कर सकते। यह ड्रामा बना हुआ है। ड्रामा ऐसा ही बना हुआ है। तब पुरुषों को क्या करना चाहिए? कन्याओं-माताओं को क्या करना चाहिए? कन्याओं-माताओं को तो वरदान मिला हुआ है कि स्वर्ग का गेट कन्याएँ-माताएँ ही खोलेंगी। शास्त्रों में भी आया है- ज्ञान का कलश किसको दिया? लक्ष्मी माता को दिया। तो जिनको जीवन में प्रैक्टिकल में धारण करने के लिए ज्ञान का कलश मिलता है, प्रैक्टिकल माने शरीर के द्वारा, प्रैक्टिकल माने इन्द्रियों के द्वारा, तो सच्चाई से; त्रिया-चरित्र से नहीं, सच्चाई से, उसे सत कहो, सत्व कहो, पवित्रता की बड़े-ते-बड़ी शक्ति कहो, ज्ञान कहा ना! किसने दिया? ऊँच-ते-ऊँच बाप शिव ने दिया। ऊँच-ते-ऊँच बाप का जो वर्सा है, वो बड़े-ते-बड़ी शक्ति होगी या नहीं होगी? उसके समान कुछ भी पवित्र नहीं है; लेकिन जीवन में धारण करके रह सकें तब और पुरुष धारण नहीं कर सकता। पुरुष एकांत पा करके दुर्योधन-दुःशासन भी बन पड़ता है और शक्ति को क्षीण कर देता है। बाप ये बात नहीं कहते हैं कि दुर्योधन-दुःशासन बनो, दुष्ट युद्ध करो, बाहुबल का दुष्ट शासन करो; बाप कहते हैं- इन्द्रियों से सुख देना है और सुख लेना है; न इन्द्रियों से दुख देना है, न दुख लेना है। तो पुरुष, जिनको ये टाइटिल भगवान से मिल गया कि सब पुरुष दुर्योधन-दुःशासन हैं, वो ऐसा प्रयास नहीं कर सकते? भगवान की जो वाणी वेदवाणी/ब्रह्मवाक्य मुरली है, उसको झूठा साबित कर सकते हैं? बाप ने तो बोल दिया- पुरुष सब दुर्योधन-दुःशासन हैं। ''सभी दुःशासन अथवा दुर्योधन हैं। द्रौपदियों के चीर सभी हरते हैं।'' (मु.19.7.73 पृ.2 आदि) और प्रमाणित भी कर दिया- 70/80 साल के बुड्ढे भी बच्चा पैदा कर सकते हैं, करते रहते हैं। ''देखो बच्चे, आजकल तो 70-80 वर्ष वाले भी विख को छोड़ते नहीं हैं।'' (मु. 1.9.73 पृ.3 मध्यांत) ''आजकल तो बूढ़े को भी गटर में गिरने की दिल होती है। 60 वर्ष बाद भी बच्चे पैदा करते रहते।'' (मु.30.7.74 पृ.3 मध्य) अरे, बुड्ढे व जवान की बात नहीं है, मन को कण्ट्रोल करने की बात है। मन को कण्ट्रोल किया तो इन्द्रियाँ भी कण्ट्रोल्ड हो जाएँगी।

तो बताया कि माताओं में जो संसार की सबसे बड़ी माता है, कौन? (किसी ने कहा- जगदम्बा) लक्ष्मी नहीं? (किसी ने कहा- हाँ, लक्ष्मी...) दो-दो? सबसे बड़ी एक होगी या दो होंगी? (किसी ने कहा-जगदम्बा भी माँ है, लक्ष्मी दूसरे नम्बर की माँ है।) अरे, सत एक होगा या दो होंगे? (किसी ने कहा- एक) गॉड इज़ ट्रुथ, ट्रुथ इज़ गॉड। सत्य को ही भगवान कहा जाता है। अगर स्त्री चोला है, तो भगवती कहा जाता है। तो अव्वल नंबर में धारण करने वाली एक होगी या दो होंगी? एक होगी, दो नहीं हो सकतीं। अगर दो हैं भी, तो उन दोनों आत्माओं के स्वभाव-संस्कार को मिला करके एक करना पड़ेगा। जिसकी यादगार है-महालक्ष्मी-भारत माता और जगदम्बा; लक्ष्मी और जगदम्बा; महागौरी और महाकाली। दोनों आत्माओं के स्वभाव-संस्कार मिलकर जब तक एक नहीं होंगे, तब तक समस्या का हल होने वाला नहीं है, सम्पूर्ण राजधानी स्थापन नहीं हो सकती।

तो लक्ष्मी और जगदम्बा, दोनों में ज़्यादा पावरफुल कौन है? (किसी ने कहा-लक्ष्मी) लक्ष्मी ज़्यादा पावरफुल है? सारे जगत की अम्बा बन जाती है? सारे जगत माने 500-700 करोड़ की अम्मा बन जाती है या केवल देवताओं की अम्मा है? देवताएँ तो थोड़े होते हैं और जगत में तो देवताएँ भी हैं, राक्षस भी हैं, मनुष्य भी हैं। वो जगत की अम्मा, जगदम्बा और वो भारत माता। भा+रत, 'भा' माने ज्ञान की रोशनी में जो सदा लगा रहता है, उसकी माता और जगत पिता। जो जगत पिता है, जिसे कहा जाता है जगन्नाथ, गोरा होता है या काला होता है? (किसी ने कहा- काला होता है) उड़ीसा के जगन्नाथ मंदिर में जाकर कभी देखा? मूर्ति कैसी है? (किसी ने कहा- काली है) बड़ी-2 आँखों वाली है। वो महाकाली है और वो महाकाल है। वो ही महाकाल जब महागोरा बनता है, तो किसके सहयोग से बनता है? महागौरी के सहयोग से महागोरा बनता है माना अव्यक्त वाणी में हम बच्चों को क्या

ऑर्डर दिया? क्या करो? (किसी ने कहा-विजयमाला का आवाहन करो) पूरी विजयमाला के मणकों का आवाहन कर लें, ऐसा हो सकता है? अरे, वो तो छोटी-2 शहद की मक्खियों की रानी है। छोटी मक्खियों का शहद तो बहुत अच्छा माना जाता है, आँखों में लगाएँ तो चश्मा भी उतर जाए। शहद की बड़ी मक्खियाँ भी होती हैं, होती हैं कि नहीं? हाँ! तो बताओ, शहद की बड़ी मक्खियाँ कौन और छोटी मक्खियाँ कौन? जगदम्बा, रुद्रमाला में बड़ी मक्खी है और विजयलक्ष्मी, जो विजय दिलाने वाली है, वो छोटी मक्खियों की रानी। उसके लिए बोला- ''मक्खियों की भी रानी होती है। रानी के साथ पीछे-2 सब मक्खियाँ जाती हैं।'' (मु.ता.3.6.76 पृ.2 आदि) दो-चार दिन लगाती है या एक बार में ही आ जाती है? (किसी ने कहा- एक बार में ही आ जाती) अभी रुद्रमाला के मणकों को तो 40 साल हो गए, आते जा रहे हैं, अभी भी आ रहे हैं। इतना लम्बा टाइम! और छोटी मक्खियों की जो रानी है, वो जब उड़ेगी तो 16,000 इकट्ठी हो जाएँगी। जिसके लिए बोला- ''भारत माता शिवशक्ति अवतार, अंत का यही नारा है।'' (अ.वा.21.1.69 पृ.24 आदि) वो आएगी मानो क्या हो गया? अंत हो गया। उससे पहले क्या होगा? उसके आने से पहले जो बड़ी मक्खियों की रानी है, जगदम्बा रूपी रुद्रमाला का मणका, जो रुद्रमाला में जगत्पिता के साथ ऊपर दिखाया जाता है; जगत्पिता और जगदम्बा दोनों निराकारी हलके-फुलके फूल शिव ज्योतिबिंदु के साथ हैं। एक लेफ्टिस्ट का पार्ट बजाने वाला मणका और एक राइटियस का पार्ट बजाने वाला। लेफ्ट हाथ से गंदगी साफ की जाती है और राइट से दान-पुण्य का अच्छा काम किया जाता है। तो ये जगदम्बा को महाकाली के रूप में निमित्त बनाया हुआ है कि दुनिया में जितने भी असुर रावण सम्प्रदाय हैं, चाहे वो 500-700 करोड़ की दुनिया में हों, चाहे वो अपन को सिर्फ़ ब्रह्माकुमार-कुमारी कहलाने वाले हों और चाहे वो अपन को प्रजापिता की औलाद कहे जाने वाले रुद्रमाला के मणके हों, सभी कलियुग अंत की शूटिंग में जाकर माया के चम्बे में फँस जाते हैं। माया किसी को छोड़ती नहीं है; क्योंकि माया के साथ प्रकृति की ताकत मिक्स हो जाती है, जो प्रकृति ईश्वर/प्रकृतिपति/मायापति/लक्ष्मीपति को छोड़कर दुनिया की सबसे बड़ी ताकत है। ऐसी प्रकृष्ट रचना है, जो बाप के सब बच्चों को हप्प करके बैठ जाती है। कितने भी बाप की भुजाओं के रूप में बड़े-से-बड़े सहयोगी बच्चे हों, उन भुजाओं को काट-2 कर, अपनी कमर की लज्जा बचाय लेती है और बाप को बदनाम कर देती है। खुद बच्चों के ऊपर राज करेगा खालसा बनकर बैठ जाती है। सारी दुनियाँ की मनुष्य-आत्माओं के ऊपर, चाहे अष्टदेवों में ही क्यों न आने वाली हों, उन सबके ऊपर राज ज़रूर करेगी। लक्ष्मी के ऊपर भी राज करेगी। जो लक्ष्मी 84 के चक्र में एक आत्मा के सिवाय और किसी की इन्द्रियों का संग का रंग नहीं लेती, गायन है 'वरौं शम्भु न तो रहूँ कुँवारी'। द्वैतवादी राक्षसी राज्य द्वापरयुग में भी, 63 जन्मों में मनुष्य-सृष्टि के बाप शंकर को स्त्री जन्म लेकर वरण करती है। अगर पुरुष का जन्म मिला तो, कोई स्त्री का वरण नहीं करेगी; संन्यासी रहेगी और अभी संगमयुग में भी क्या है? (सभी ने कहा- संन्यासी) शूटिंग कर रही है।

तो देखो, 5 हज़ार वर्ष की सब प्रकार की शूटिंग मनुष्य-आत्माओं के द्वारा अभी हो रही है। शरीर के द्वारा, वाचा के द्वारा, दृष्टि के द्वारा अच्छे-ते-अच्छा पार्ट बजाने वाली आत्माएँ अभी पार्ट बजाय रही हैं और जन्म-जन्मांतर सुखी रहेंगी और बुरे-ते-बुरा पार्ट बजाने वाली आत्माएँ भी अभी पार्ट बजा रही हैं। बुरे-ते-बुरा पार्ट बजाने वालों और अच्छे-ते-अच्छा कर्म करने वालों का भी बाप बन करके जो पार्ट बजाती है, वो आत्मा भी अभी पार्ट बजा रही है। वो अच्छे-ते-अच्छे में भी बाप और बुरे-ते-बुरे में भी बाप बनकर पार्ट बजाती है और उसके जो आठ जन्म-जन्मांतर के सहयोगी रूपी भुजाएँ भी कैसी हैं? जो अव्यक्त वाणी में बोला- 100 ब्राह्मणों की माला रूपी संगठन फिर भी बन जाता है; लेकिन 8 बहुत ऊपर-नीचे होते हैं। अभी-2 ऊपर और अभी-2 नीचे। ''आज भी बाबा बोले, अब माला तैयार करो। माला तैयार होना अर्थात् खेल खतम। ..... ब्रह्मा अपने तीव्र पुरुषार्थ के संस्कार प्रमाण माला बनाने लगे और बाप मुस्कुराने लगे। ..... 100 की माला फिर भी 90 परसेंट बन गई; लेकिन 8 की माला में बदली बहुत थी। किसको 4 नं॰ दें, किसको 5 नं॰ दें।'' (अ॰वा॰18.1.79 पृ॰230 अंत-231 आदि) उनका बाप कौन जो सबसे ज़्यादा ऊपर-नीचे होता है? अभी-2 अच्छे-ते-अच्छा पार्ट और अभी-2 एकदम डाउन, एकदम गड्ढे में। भक्त लोग चोटी वाले की जय नहीं बोलेंगे, भक्त गड्ढे वाले की जय बोलते हैं! यह पार्शलिटी भक्त लोग क्यों करते हैं? अरे, भक्त खुद गड्ढे में गिरते हैं, तो गड्ढे वाले की जय बोलेंगे या ऊपर चढ़ने वालों की जय बोलेंगे? (किसी ने कहा- गड्ढे वाले की) तो यह ड्रामा बना हुआ है कि प्रकृतिपति के सत् की बड़े-ते-बड़ी पावर लम्बे समय तक उस जगतमाता ने धारण की है। पाँच तत्वों से बने हुए शरीर की शक्ति कोई और आत्मा धारण नहीं कर पाती है और जगतमाता धारण करती है। पाँच तत्वों के संघात प्रकृति में इतनी ताकत है कि इस दुनिया के जो भी कलियुग के अंत में मनुष्यमात्र हैं, सब रावण सम्प्रदाय बन जाते हैं। राम ही रावण बन जाता है तो कौन बचेगा?

बाप ही रावण बन गया, तो सारे बच्चे रावण बन गए; लेकिन बच्चे फिर गलत कर रहे हैं या सही कर रहे हैं? अरे! बाप रावण बना तो बच्चे फॉलो फ़ादर न करें? (किसी ने कहा- करें) हाँ, कितनी जल्दी बोला- करें! और ब्रह्मा मुख से सुप्रीम सोल बाप क्या बोलते हैं? सुप्रीम सोल बाप बोलते हैं कि शंकर को फॉलो नहीं करना है। ''जहाँ मास्टर ब्रह्मा बनना है वहाँ मास्टर शंकर नहीं बनना। यह बुद्धि में ज्ञान चाहिए। कहाँ मास्टर ब्रह्मा बनना है, कहाँ मास्टर शंकर बनना है।'' (मु. 28.5.70 पृ.256 आदि) और बच्चे करते हैं या नहीं करते हैं? बाप बताते हैं- बड़े-ते-बड़ा कामेन्द्रिय का पाप कर्म है, वो बच्चे कामेन्द्रिय का पाप कर्म करते हैं, उस कर्म के समय अपनी मनमानी करते हैं। सब पुरुष हैं ही दुर्योधन-दुःशासन, वो तो मजबूर हैं, तो करेंगे ही। इस पुरुष जन्म में जैसे कि वो उनका सुख का वर्सा है; लेकिन स्त्रियों में भी बता दिया- कन्याओं-माताओं में भी कोई सूपनखा/पूतना होती हैं। सूपनखा कौन थी? रावण की बहनी। 'दुष्ट हृदय अतिदारुण सैनी'। इतनी दुष्टता भरी हुई थी, ऐसे ही जंगल में घूमती-फिरती रहती थी। अरे, कन्या है, तो बाप या बड़े भाई के घर में रहना चाहिए ना! सारी दुनियाँ में घूमी-2 क्यों फिरती है! लेकिन उसका नाम ही है 'सूपनखा'। क्या करती थी? खुद ही राम-लक्ष्मण के सामने आँख लड़ाने जाती थी और उनके ना कर देने पर भी नहीं मानती थी, बार-2 तंग करती थी। तो राम ने लक्ष्मण को इशारा दे दिया- उसकी नाक काट दो। नाक कट गई तो रावण के दरबार में जाकर रो-2 के गुहार लगाई- अरे, ये वनवासी, इन्होंने मेरी नाक काट दी। अपनी गलती नहीं बताई; नाक काटने की गलती बता दी। तो बाबा ने बोला है- इस भारत का नाम बदनाम करने वाली हैं- वेश्याएँ। ''वेश्याओं को भी उठाना है। यह है ही वेश्यालय, भारत का नाम भी इन्होंने ही गिराया है।'' (मु.ता.31.1.74 पृ.2 अंत) वेश्याएँ हैं- विषियस कर्म करने वालीं। उनकी विषय-वासना की जब पूर्ति नहीं होती है, तो क्या करती हैं? दुनिया में जो रावण सम्प्रदाय वाला प्रजा के ऊपर प्रजा का अनलॉफुल राज्य फैला हुआ है, वहाँ जाकर मीडिया के सामने या इंटरनेट में जा करके खूब ग्लानि करती हैं और चैतन्य भारत का नाम बदनाम कर देती हैं। उन वेश्याओं का साथ लम्पट/कीचक ही देते होंगे। जो ब्रह्माकुमारियों के पीछे पड़ते हैं, मुरली में उनका नाम दिया है 'कीचक'। 'कीच' माने कीचड़, 'क' माने करने वाले। क्या करते हैं? जैसे भैंसा है ना, गैंडा होता है ना! कहाँ आनंद से लोटता है? कीचड़ में बड़ा आनंद लेता है। ऐसा कीच रूपी गंदगी फैलाने वालों का साथ वो वेश्याएँ ही लेती हैं और खूब दुनिया में ग्लानि की गंदगी फैलाती हैं और उनमें सबसे मुख्य पार्ट बजाने वाली मुखिया हुई- महाकाली। ये भारत का नाम बदनाम करने वाली वेश्याएँ, महाकाली की भुजाएँ बनती हैं। झट से भुजाएँ बन जाती हैं। ग्लानि बड़े-ते-बड़ा परमात्म-बॉम्ब फूटे और फट से उनको काली करतूतों की भुजा बनने का मौका मिल जाता है। तो महाकाली की ताकत बढ़ेगी। उनमें भी नंबरवार होती हैं; सब एक जैसी नहीं हो सकतीं।

भारत के राजाएँ दुनिया की हिस्ट्री में, बड़े-ते-बड़े व्यभिचारी बने, वो राजा बनने वाली काली आत्माएँ रुद्रमाला में होती हैं। रुद्रमाला में स्वभाव-संस्कार से भल सब पुरुष हैं; परंतु जो परमपुरुष का पार्ट बजाने वाली साकार रूप में मनुष्य-आत्माओं का बाप है, जिसे शास्त्रों में 'शंकर' कहा गया है, वह रुद्रमाला का मुखिया मणका है, सारे रुद्रगण उसी को फॉलो करने वाले हैं। स्त्री चोला है, तो फिर भी गनीमत है और पुरुष चोले में हैं तब तो वो हैं ही दुर्योधन-दुःशासन; उनकी बात छोड़ दो। जिन राजाओं ने जन्म-जन्मांतर की व्यभिचारी बनने की आदत धारण कर ली, व्यभिचार के संस्कार आ गए, स्वभाव पड़ गया, वो आत्माएँ अगले जन्मों में जब स्त्री चोला लेती हैं, तो पूर्वजन्म का व्यभिचार का स्वभाव स्त्री चोले में आता है और उनमें भाँति-2 के हैं जो कोई भारतीय या विदेशी धर्मों में कन्वर्ट होने वाले हैं। भारतीय धर्मों की विशेषता है- ब्रह्मचर्य को फिर भी महत्व देते हैं; जैसे- बौद्धी, संन्यास, सिक्ख। ये भारतीय धर्मों से कन्वर्ट होकर आई हुई आत्माएँ हैं। बीज-रूप में रुद्रमाला में भी हैं और ब्रह्मा की गोद में पलने वाले आधार रूप जड़ें भी हैं, हर धर्म से आए हुए हैं। सूर्यवंशी गिने-चुने हैं; बाकी सब दूसरे धर्म-वंशों से आए हैं। हाँ, कोई भारतीय धर्मों से आए हैं, कोई विदेशी धर्मों से कन्वर्ट होकर आए। तो जैसे-2 जन्म-जन्मांतर के स्वभाव-संस्कार हैं, संग का रंग लिया है, वैसा ही पार्ट बजाती हैं।

तो वो आत्माएँ, जो भारत का नाम बदनाम करने वाली हैं, परमात्म-बॉम्ब फोड़ने वाले लम्पटों के साथ मिलकर एक हो जाती हैं, सारी दुनियाँ में बाप की ग्लानि फैलाती हैं। जो आत्माएँ परमात्म-बॉम्ब की आवाज़ फैलाने में बड़ी सहयोगी बन जाती हैं, वो रुद्रमाला के मणके होते हैं- कोई कम विकारी, कोई ज़्यादा विकारी। तो माया की गिरफ्त में सारे ही आ जाते हैं, माया किसी को छोड़ती नहीं। तो प्रकृति अपना सब-कुछ दिखाएगी। प्रकृति माता के कण्ट्रोल में जो-2 भी आ जाएँगे, सबकी ताकत लड़ाई में झोकेंगी। ये सारी रावण की, माया और प्रकृति की कंबाइड सेना हो गई। राजाएँ सेना को आगे कर देते हैं, खुद पीछे रहेंगे। तो जो

प्रकृति रूपी सारे जगत की अम्बा है, महाकाली को ऑर्डर मिलता है, जो मुरली में ब्रह्म वाक्य बोला है- शंकर की जगह पर त्रिमूर्ति के चित्र में जगदम्बा को रखा होता तो समझाने में बड़ा सहज हो जाता। ''शंकर के बदली में (जगदम्बा) सरस्वती होती तो बिल्कुल सिम्पल हो जाता था।'' (मु. 3.11.66 पृ.4 मध्यांत) जगदम्बा वाली आत्मा जब तमोप्रधान बनती है, तो उसके मस्तक पर अधूरा ज्ञान-चन्द्रमा ब्रह्मा प्रवेश करके महाकाल का पार्ट बजाता है और सबको कण्ट्रोल में कर लेता है। उस बड़े-ते-बड़ी माता को ऑर्डर मिला हुआ है- असुर संघारिणी बनना है, विधर्मियों के प्रति शक्ति-स्वरूपिणी बनना है, महाकाली बनना है, ज्वाला-रूपिणी बनना है। कलियुग अंत में सारी दुनियाँ रावण सम्प्रदाय बन जाती है। ब्रह्माकुमार-कुमारी जो अपन को कहते हैं- हम अम्माकुमार हैं, उनके क्या हालात हैं और जो अपन को प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारी कहते हैं, उनका क्या हाल है? सब रावण सम्प्रदाय बने हुए हैं या शिव के "पवित्र रहो, योगी बनो"- इस वाक्य को फॉलो करने वाले हैं? अमृतवेले क्या करते हैं? अमृतवेले का रिज़ल्ट क्या है, जिस अमृतवेले का प्रभाव सारे दिन पर पड़ता है? और अभी तो सच्चा-2 अमृतवेला चल रहा है। ''तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में 40-50 वर्ष लगते हैं।'' (मु.ता. 6.10.74 पृ.2 अंत) ये पक्का-2 अमृतवेले का टाइम हुआ। तो अमृतवेले में अभी क्या हाल है, 80 साल हो गए, अभी तो 10 साल ही बचे हैं। तो हालात क्या कहते हैं? देहभान में ज़्यादा रहते हैं। मनन-चिंतन-मंथन में, ज्ञान में बुद्धि ज़्यादा चलती है या दुनियावी बुद्धि ज़्यादा चलती है? (किसी ने कहा- दुनियावी में) तू-तेरा, मैं-मेरा, इस चक्कर में तो नहीं रहते हैं? चलो, बच्चों की बात छोड़ दो, परिवार में माँ, बच्चों के लिए सबसे जास्ती शक्तिशाली होती है। तो उस माँ को 'असुर संघारिणी' टाइटिल मिला हुआ है, तो अपना काम करेगी। यहाँ तक भी करेगी कि बाप के जो नम्बरवार बच्चे सहयोगी रूपी भुजाएँ बने हैं, उन भुजाओं रूपी सहयोगियों को भी बाप से कट कर देगी, अनिश्चय-बुद्धि बना देगी, अपनी कमर की लज्जा बचाय लेगी। बाबा यही बताना चाहते हैं कि कोई भी बच्चा हो, बच्चा किसे कहें? (किसी ने कहा-जो आत्मा की स्थिति में है) और बाप को पहचानने वाला कोई भी बच्चा हो। सन् 1976 से लेकर अब तक भी, 40 साल हो गए, बाप के एडवांस बच्चों में, सन् 1976 बाप का प्रत्यक्षता वर्ष था। कौन-से बाप का प्रत्यक्षता वर्ष था? राम बाप का प्रत्यक्षता वर्ष था। तो जो राम बाप को फॉलो करने वाले बच्चे हैं, उन बच्चों में कोई कितना भी पुराना हो और कितना भी नया हो, इन 40 साल के अंदर वो 20 साल का इंतजार बिल्कुल न करें। पूरी राजधानी कब स्थापन हो जावेगी? (किसी ने कहा- 2028 में) पूरी राजधानी में राजा चाहिए, रानी चाहिए, राज्य-अधिकारी चाहिए, बड़े-2 फर्स्टक्लास दास-दासी भी चाहिए या फोर्थ-क्लास दास-दासी भी चाहिए, चाण्डाल भी चाहिए, प्रजा भी चाहिए। राजधानी में सब तरह के चाहिए ना! तो ज़्यादा-से-ज़्यादा कितने साल का इंतजार करेंगे? 10 साल का इंतजार करेंगे, इससे ज़्यादा नहीं। इंतजाम करना है, इंतजार करने वाला नहीं बनना है।

जल्दी-से-जल्दी, जितना जल्दी हो सके, बाप का ये जो लास्ट संदेश है, खास संदेश बताया, इसको सारी दुनियाँ में रिलेय करना है। जहाँ तक कि (ज्ञान का लेन-देन करने वाले बेहद के) लंदन में जो (सारे संसार की जन्मदात्री महालक्ष्मी) जनक बच्ची बैठी हुई है, विदेश के जो भी बच्चे हैं- डबल विदेशी हों, सिंगल विदेशी हों, हद में हों, बेहद में हों, सब बच्चों को संदेश देने वालों में मुख्य कार्य करने वाली है, उसके एक बोल से बड़ा काम हो सकता है, उस बच्ची तक भी ये संदेश पहुँचाना है। इसलिए जहाँ तक आवाज़ पहुँचा सकते हैं, वहाँ तक बाप की आवाज़ पहुँचनी चाहिए। जो बाप का तन गुप्त रूप में है, किसी (विरोधी) के सामने नहीं आना चाहिए, दुनिया में सिर्फ़ आवाज़ पहुँचनी चाहिए। आवाज़ पहुँचेगी, यह अंदर से निश्चय है? (किसी ने कहा- निश्चय है) पूछा, आवाज़ पहुँचेगी? माने ब्रह्मा बाबा को कोई-2 बच्चों के ऊपर निश्चय नहीं है, तो फिर पूछ रहे हैं- आवाज़ पहुँचेगी? फिर दोबारा पूछा- पहुँचेगी? पहुँचेगी ना! (सभी ने कहा- पहुँचेगी) हाँ! क्योंकि बाप की आवाज़ फैलाने के बजाय, आज बच्चों में खुद का ज्ञान बहुत चल गया है। खुद को बाप से भी बड़ा ज्ञानी समझते हैं। तो अपनी आवाज़ पहुँचाएँगे या बाप की आवाज़ पहुँचाएँगे? (किसी ने कहा- बाप का आवाज़) जिनमें देहभान होगा, अपना ज्ञान सुनाते होंगे, हम ही बाप हैं, जो भक्तिमार्ग में भी गुरू बन करके बैठे होंगे, यहाँ शूटिंग करेंगे कि नहीं करेंगे? (सभी ने कहा- करेंगे) शिवोऽह्म! शंकराचार्य ने क्या किया? धर्मपिता है ना! क्या किया? शिवोऽह्म! माने दुनिया में और कोई शिव अलग से नहीं है; हम ही शिव हैं, हम ही गीता ज्ञानदाता हैं। तो जिनको बड़े या छोटे देहधारी धर्मगुरु बनने की शूटिंग करनी है, उनको तो करनी ही है। वे सब ब्रह्मा की गोद में पलने वाले कुखवंशावली हैं; ब्रह्मा के मुख से निकली हुई शिव की वाणी को मानने वाले वंशावली नहीं हैं। ब्रह्माकुमारियों में सृष्टि-वृक्ष की जड़ रूप आधारमूर्त में कुखवंशावली हैं और एडवांस पार्टी रुद्रमाला बीज-रूप में ब्रह्मा की मुखवंशावली हैं; परंतु ब्रह्मा के मुख से निकली हुई बातों पर मनन-चिंतन-मंथन नहीं करते हैं; इसलिए बाप को पहचानते ही नहीं हैं- बाप क्या है।

तो बाबा यही बताना चाहते हैं कि कोई भी बच्चा (विनाश के लिए) 20 साल का इंतजार न करे। बाप का बच्चा कौन? जिसने बाप को पहचान लिया, मान लिया, जान करके बाप की पढ़ाई को पढ़ भी रहा है, एक बाप से पढ़ता है, जो ब्रह्म वाक्य में बोला है- एक से ज्ञान सुनना चाहिए, अनेकों से ज्ञान सुना तो व्यभिचारी ज्ञान हो जावेगा। ''मेरे से ही सुनो। अगर औरों से भी सुना तो व्यभिचारी ज्ञान हो जावेगा।'' (मु.ता.12.1.74 पृ.2 आदि) वो व्यभिचारी ज्ञान वाली आत्माएँ ज़्यादा जन्मों तक व्यभिचारी धर्मों में रहेंगी। तो 20 साल का इंतजार करने वाले बच्चों में नहीं रहना चाहिए। वो देह-अभिमानी बच्चे हैं, जो 20 साल का इंतजार करेंगे कि 20 साल में दुनिया का विनाश होगा। देही-अभिमानी स्थिति रहे। स्थिति कैसी होनी चाहिए? (किसी ने कहा- आत्मा-अभिमानी) नहीं तो क्या होता है? बताया, निशानी बताई- लोहे के पिंजरे से निकलते हैं, लोहे का पिंजरा माने लौकिक दुनिया के सम्बंधियों के बंधन से बुद्धि भले मुक्त हो जाती है; लेकिन सोने की जंजीरों में फँस जाते हैं। जो ब्राह्मणों की दुनिया का संगठन बना है, उन ब्राह्मणों की दुनिया में, देह के लगाव-झुकाव में फँस जाते हैं, वहीं बुद्धि बार-2 भागती है, उन्हीं का संग करना चाहते हैं, बाप को भूल जाते हैं, उन्हीं की बार-2 याद आती है, बाप की याद नहीं आती है। लोहे के पिंजरे से निकलते हैं, सोने के पिंजरे में बंध जाते हैं। तो क्या करना है? मान लो, पूरा परिवार ज्ञान में चलता है, पूरे परिवार के सभी भांती ज्ञान में चलते हैं, तो अपने को देखना है- बुद्धि ज़्यादा कहाँ फँसी रहती है। बेटे, बेटी, माता में फँसी रहती है या बेटे की बहू में फँसी रहती है? बहुत तो ऐसे भी हैं, जो ये भी नहीं समझते कि अभी विनाश काल में बंधन तोड़ने का टाइम चल रहा है या नए बंधन जोड़ने का टाइम चल रहा है? (किसी ने कहा-तोड़ने का) और तोड़ने के टाइम पर कोई नए-2 (बंधन) जोड़ता रहे, भले बच्चा ज्ञान में चलता है, सब जानते हैं- हाँ, ज्ञान में चलता है, फिर भी बच्चे की शादी आई, लड़की बड़ी सुन्दर है, घर बड़ा धनाढ्य है, अहा! लट्टू हो जाते हैं। तो लोहे के पिंजरे में गए या नहीं गए? (किसी ने कहा- गए) इन पिंजरों से भी मुक्त हो करके, फरिश्ता बनें; क्योंकि फरिश्तों का इस दुनिया में कोई के साथ कोई देह का रिश्ता नहीं होता है- मेरी बहू, मेरा दामाद, मेरा ये, मेरा वो। अब लास्ट टाइम है, महामृत्यु सबके सामने खड़ी है। सामान्य मृत्यु तो जन्म-जन्मांतर होती रही, तो क्या होता रहा? 'अंत मते सो गते' होती रही। अभी भी क्या होगा? अभी तो महामृत्यु है, महामृत्यु सामने खड़ी है, आई-कि-आई। तो क्या करना है? अब महामृत्यु के समय अंत में क्या करना है? (किसी ने कहा-एक बाप का ही बनकर बाप को ही याद करना है) अरे! 'हम तुम्हें हेरे, तुम नहीं हेरो, क्यों ऐसे भये कठोर, तनिक तुम देखो मेरी ओर।' हाँ, क्या बात बताई? अभी दुनियाँ में सम्बन्ध तोड़ने का टाइम चल रहा है; अभी नए-2 सम्बंध जोड़ना नहीं है। किसके साथ जोड़ना है? (किसी ने कहा- एक बेहद के बाप के साथ) एक बाप दूसरा न कोई। अब नहीं तो कब नहीं। 80 साल से ये बोलते चले आए- 'अब नहीं तो कब नहीं।' अब ये लास्ट संदेश है। इसके बाद फिर बच्चों के लिए और दुनिया के लिए भी कोई संदेश नहीं होगा। ओम् शांति।